KASHYAP SAMACHAR

कश्यप समाचार

कश्यप समाचार

(कश्मीरी पंडित सभा, जम्मू का मुख पत्र)

अंक : 5 नवंबर-दिसंबर 1994 संख्या : 10-11

हिंदी भाग

कश्मीरी भाग

मूल्य : रु 10/- वार्षिक : 80/- विदेश $ 30/-(अमरीकी) महाजन प्रेस, कच्ची छावनी, जम्मू में छपा।

अध्यक्ष की ओर से

प्रिय भाइयो और बहनो,

मैं आपके लिए शांति, सम्पन्नता और दीर्घायु की कामना करता हूं।

1994 के शरदकालीन विवाह-उत्सवों के मौसम का दूसरा चरण, 4 दिसंबर से दस दिन के संक्षिप्त समय के लिए उसके बाद 1995 में 20 जानवरी से ये उत्सव फिर शुरु हो जाएंगे। कश्मीरी पंडित सभा बार बार अपील करती रही है कि इन उत्सवों पर खर्चे में कटौती की जाए। हम दहेज और "हयों त—द्य त" (लेन-देन) को कम करने, "गरु'-अचुन" की प्रथा को पूरी तरह से समाप्त करने और बारातियों की संख्या को ज्यादा से ज्यादा 75तक सीमित रखने की प्रार्थना करते रहे हैं।

प्यारे भाइयो ! विस्थापित हिंदुओं को तबाह कर के रख दिया गगा है। तंबुओं और किराए के घरों में रहने वाले विस्थापितों के हालात आप सब को मालूम हैं। इस वक्त उनको शिक्षा, रोज़गार व्यापार तथा जीवन यापन के दूसरे साधनों से वंचित किया जा रहा है।

सरकार को उग्रवादियों के स्वास्थ्य और पुनर्वास की ज्यादा चिंता है। उसे आंतकवादियों के मानवाधिकरों की परेशानी खाए जा रही है। वह उनके साथ सौदाबाज़ी करने पर तुली है, भले ही ऐसा उसे हिंदुओं की कीमत पर करना पड़े।

हमारी जाति समूल नष्ट हो रही है। कश्मीरी पंडित उपेक्षा, गरीबी और अत्याचार से तिल तिल करके मर रहा है। मेरे प्रिय भाइयो और बहनो, मैं आप सब से अपील करता हूं कि ज़रा इस ओर भी ध्यान दें। क्या हम लोगों को ऐसी शान शौकत का प्रदर्शन करना चाहिए ? क्या अपनी बरादरी और अपनी सरकार के प्रति हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं ? हम ऋषियों की संतान हैं। निर्वासन के इस कठिन दौर में यह हमारा धर्म बन जाता है कि हम झूठी शान के प्रदर्शन की अपनी इच्छा पर ज़बर्दस्त अंकुश लगा दें।

हमें हकीकत को समझना चाहिए। अपने आर्थिक हालात के बारे में हम एक दूसरे को झूठ नहीं बोल सकते, धोखा नहीं दे सकते। हमें यहां जम्मू में रहने वाली महाजनों की या सिखों की बरादरी से कुछ तो सीखना चाहिए।

फिज़ूल प्रदर्शन की अपनी प्रवृत्ति पर हमें रोक लगानी ही होगी।

—त्रिलोकी नाथ खोसा

संपादकीय

समेकित दृष्टिकोण अपनाएं

कश्मीर में भारतीय जनतंत्र के समर्थक होने के नाते कश्मीरी पंडितों की ज़िम्मेदारी बहुत भारी थी। हम चिंतित रहते कि चुनाव यथा समय हो जायें, चुनाव यथासंभव साफ सुथरे हों, सही व्यक्ति विधान सभा और संसद में जाए। लेकिन इस प्रकिया में हमारा अनुभव सुखद नहीं कहा जा सकता। यह ठीक है कि जनतंत्र में अधिसंख्या का मत हावी रहता है, बहुमत की ही चलती है। पर अधिसंख्या या बहुमत की सत्ता का प्रभाव चुनाव के बाद और सरकार बनने के बाद शुरू हो जाता है। कानून बनने और उसके लागू होने, दोनों हालतों में बहुमत का बोलबाला होता है, इस बात से किसी भी जनतांत्रिक को कोई एतराज़ नहीं होता। परन्तु कश्मीर मे बहुमत का जोर चुनाव से पहले से ही शुरू होता था और चुनाव के दिनों चरमसीमा पर पहुंच जाता था। हमें कभी 'कांग्रेसी' कभी 'जनताई' कभी 'नेशनली' और कभी निरे 'भारतीय' होने की गाली दी जाती थी। ये अलग अलग नाम हमको इन नाम वाले दलों के भारतीय मुख्यधारा के निकट होने के सीधे अनुपात में दिए जाते। मतलब कांग्रेस, जनता पार्टी या नेशनल कांफ्रेस जिस कद्र भारतीयता के नज़दीक समझे जाते (सब जानते हैं कि इन नामों की तथाकथित राष्ट्रवादी पार्टियां कश्मीर में कभी अराष्ट्रीय तो कभी राष्ट्रविरोधी चेहरे पहना करती थीं) उतना यह मान लिया जाता कि कश्मीरी पंडित इन पार्टियों के भारतीय होने के ज़िम्मेवार हैं अत: डांट-डपट, गाली-गलौज, खौफ-खतरा दिखा-सुनाकर उन्हें चुनावों में भाग नहीं लेने दिया जाता। हमें याद है किस तरह वोट देने गए पंडितों को बनावटी इज्ज़त से कहा जाता कि आप ने पोलिंग बूथ पर आने का कष्ट किया ही क्यों, हम ने आपका वोट पहले ही डाल दिया है। हम में से जिस ने फिर भी अंदर जा कर खुद अपना मत देने का आग्रह किया उसे मारा पीटा गया।

लेकिन कश्मीरी पंडित मन ही मन खुश था कि चलो मैं ने मतदान नहीं किया तो क्या हुआ, जिस उम्मीदवार ने भी विजय पाई चाहे सच्चे चाहे झूठे साधनों से पाई, भारतीय संविधान तथा भारतीय जनतंत्र के घेरे के अंदर रह कर ही तो पाई और इसी से कश्मीर भारतीय राज्य में बना रहेगा। हम समझते थे कि हमारे इतने बलिदान से भी भारत कश्मीर में उपस्थित रहेगा और यों हम भारतीयों की रक्षा-सुरक्षा की प्रतिभूति मिलेगी।

पर एक समय आया जब उग्रवादियों ने चुनाव ही असंभव बना दिए। हम दो तरह से दुख हुआ। एक यह कि जनतंत्र का ज़ोर खत्म हो गया और उग्रवाद यह साबित करने में सफल हुआ कि आज तक यह वस्तुत: ज़ोर का जनतंत्र था, जन जन की आत्मा से उभरा या आत्मा में उतरा

तंत्र नहीं था। दूसरा दुख यह था कि ऐसा होगा तो हम जो जनतंत्र की उस प्रदेश में बची खुची जिदगी के कारण जीवित थे ... अब हमारा क्या होगा ? फिर ज्यादा देर नहीं लगी और हम आखिरी सांस लेने के लिए बानिहाल के इस पार भाग आए।

अब चुनाव की चर्चा फिर होने लगी है। हमारी दुविधा बढ़ रही है। हमारे मामने कई विकल्प उभर रहे हैं। चुनाव में भाग लें और इस तरह भारतीय जनतंत्र की जीत में सहायक हों। चुनाव में भाग नहीं लें जब तक कि न केवल हमारे मतदान की प्रक्रिया स्पष्ट हो बल्कि हमें चुनाव में अपने उम्मीदवार खड़े करने का भी अधिकार दिया जाय। चुनाव में कश्मीरी पंडितों के विशेष चुनाव क्षेत्र बनाए जाएं जो तम्मू में ही हों और उनके प्रतिनिधि भी जम्मू में ही अपना प्रचार करें। कश्मीर में उन का विरोध ही क्यों न किया जाय।

इस सिलसिले में कश्मीरी पंडित सभा की ओर से भी प्रयत्न हुए कि चुनाव के प्रति एक समेकित (इंटेग्रेटिड) दृष्टिकोण उभारा जा सके। विभिन्न राजनीतिक परिदृश्यों वाले नेताओं तथा उनके दलों को बैंठकों में बुलाया गया। सभा की भूमिका केवल इतनी है कि कश्मीरी पंडित एक साथ मिल बैंठकर सोचें और अभी भी केवल यही कार्य कर रही है। सभा यही चाहती है कि हम जम्मू में स्थापित-विस्थापित सभी भाई बंधुओं को साथ ले जा सकें और अपनी राजनीतिक-आर्थिक समस्याओं के प्रति सचेत होजाएं। स्वयं सभा पंडित समाज के आर्थिक सामाजिक प्रश्नों को सुलझाने और अपना शील तथा मानसिक स्तर ऊंचा उठाने पर बल देगी। उम्मीद है हमारे सदस्य-शुभचिंतक इस उद्देश्य को पूरा करने मे हमारी सहायता करेंगे।

जम्मू में सही प्रेस की कमी के कारण हम बड़ी कठिनाइयां झेल रहे हैं। फिरभी अपने पाठकों से जो हमारा प्रण है कि इस वर्ष "कश्यप समाचार" के कम से कम दस अंक निकालेंगे, उस पर हम प्रतिबद्ध हैं। हम अपने अभिभावकों, कृपालु पाठकों से अनुरोध करते हैं कि अनियमित प्रेस गैर-पेशेवर प्रवृत्ति तथा असहयोग से उत्पन्न समस्याओं को समझें और हमें आशीर्वाद दें कि "कश्यप समाचार" को हम बराबर चलाते रहें। साथ ही अपनी रचनएं भी भेजें या भिजवांएं। यह पत्रिका आपकी आवाज़ है, आपकी अभिव्यक्ति है। इसका पूरा लाभ उठाएं।

प्रार्थना

पाठकों से प्रार्थना है कि अपने मुहल्ले, इलाके, कालोनी, कैंप की धार्मिक सामाजिक गतिविधियों की रिपोर्ट हमें भेजें। सांस्कृतिक समाचार को हम प्रथमता से प्रकाशित करेंगे। रिपोर्ट हिंदी या कश्मीरी में सम्पादक के नाम, कश्मीरी पंडित सभा, अंबफला जम्मू के पते पर भेजी जा सकती है।

—प्रो० उषा काशकारी

महात्मा कबीर के निराकार राम

(दशरथ के पुत्र राम साकार मनुष्य थे, लेकिन भक्त कबीर ने उन का केवल नाम लिया और उन्हें निराकार निर्गुण मानकर भक्ति का मार्ग बताया। इस विषय पर प्रस्तुत है श्रीमती उषा काशकारी का लेख। उषा जी हिंदी की कवयित्री और एक कुशल अध्यापिका हैं।)

भारत महान देश है। भारत को महान बनाने का श्रेय इसके ऋषियों और मुनियों को, योगियों और तपस्वियों को, कवियों और मनीषियों को है। कवि कबीर दास उदार निर्भीक, सत्यवादी अहिंसा सत्य और प्रेम के समर्थक तथा क्रान्तिकारी सुधारक थे। वे जीवनपर्यन्त अपनी वाणी से उत्तरी भारत का नेतृत्व करते रहे।

कबीर निराकावादी थे। निराकार की प्राप्ति ज्ञान से सम्भव है। वह निराकार राम घट घट में बसता है, उसे बाहर खोजने की आवश्यकता नहीं है। कबीर ने अपने काव्य में बार-बार 'राम' शब्द का प्रयोग किया हैं, किन्तु उनका राम सगुण अर्थात दाशरथि राम न होकर परम ब्रह्म है। कबीर द्वारा प्रतिपादित राम व्यापक है, वह समस्त संसार में रम रहा है। वह अलख, अगोचर और वर्णनातीत है। वह केवल शास्त्रों और पुराणों के अध्ययन एवं ज्ञान से नहीं जाना जाता है। वह राम परम् ब्रह्म प्रेमपूर्ण भक्ति से प्राप्य है।

भक्ति के मार्ग में माया कनक और कामिनी के रूप में व्यवधान डालती है, अतः कबीर ने इसकी कटु भर्त्सना की है। राम के प्रति कबीर की भक्ति एक ऐसा राज-मार्ग है जिस पर सभी सुगमता से चल सकते है, उसमें ऊंच-नीच, ब्राह्मण-शूद्र का कोई प्रश्न नहीं।

'जाति पांति पूछे नहिं कोई, हरि का
भजे सो हरि का होई।'

यही हरि राम नाम जपने से भक्ति और प्रेम के सहारे ब्रह्म से तादात्म्य हो सकता है। कबीर अपने प्रियतम राम की वेदना से युक्त हैं। उनके लिए राम उसी को प्राप्त हो सकते जिनके मन में तीव्र वेदना हो।

आंखडियां झांई पड़ी, पंथ निहारि-निहारि
जीभड़ियां छाला पड्या राम पुकारि-पुकारि।

आत्मा और परमात्मा का जब ऐक्य हो, जाता है, तो उस समय जीव की दशा ऐसी ही जाती है :-

लाली मेरे लाल की जित देखूं तित लाल।
लाली देखन मैं गयी मैं हो गयी लाल।

अपने राम जी से बिछुड़ कर कबीर को

दिन रात चैन नहीं मिलता :-

"चकवी बिछुरी रैन की आइ
मिली परभाति।
जो जव बिछुरे राम से ते दिन
मिलै न रति ।।

कबीर दास जी के तन-मन में राम
का विरह सम् ा है।
वासरि सुख न रैन सुख ना सुख सपने मांह
कबीरबिछुड़ या राम सूं न सुख धूप न छांह ।।

कबीरपर तो नाथ पंथ का असर स्पष्ट है। बौद्ध दर्शन के 'शून्य' का उल्लेख कबीर में आता है।

भारी कहूं तो बहु डराऊँ
हलका कहूं तो झूठ ।।
मैं का जानू राम को
नैनन कबहूं न दीठ ।।

भक्तिकाल के आरम्भ में हम कबीर को भक्ति आन्दोलन के एक प्रभाव शाली प्रवर्तक के रूप में उभरता देखते हैं। इसलिए कबीर राम की उपासना के स्थान पर निर्गुण राम की उपासना करने पर बल देते है।

"निर्गुण राम जपहु रे भाई,
अविगत की गति लखी न जाई ।।
राम नाम तिहुं लोक बखाना,
राम नाम का मरम है आना ।।

कबीर को हम संत ज्ञानेश्वर के समान महान मान सकते हैं। कबीर ने राम नाम की पवित्र अमृत धारा से मानव मन को संतुष्ट किया। कबीर को अपने राम के प्रति ऐसा प्रेम है कि वह कहते हैं :-

नैनों की करि कोठरी, पुतली पलंग बिछाइ
पलकों की चिक डारिके दिय को निया रिझाई।

अंत में मैं यही कह सकती हूं कि कबीर लिखित 'राम नाम मय' साहित्य द्वारा हम अपने को कुंदन सा शुद्ध कमल-सा मिर्मल तथा सूर्य के समान तेजस्वी बना सकते हैं। अन्त में गुप्त जी के शब्दों में :—

राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है
कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है।

★

शिवरात्रि के अवसर पर "कश्यप समाचार" का विशेषांक निकालने की योजना है। हम लेखकों से निवेदन करते हैं कि इस अवसर पर उपयुक्त लेख और कविताएं भेजें। लेख साफ और कागज़ के एक ही तरफ लिखे हों। कश्मीरी के लेख हमारी स्वीकृत लिपि में ही हों, तो हम आपके आभारी होंगे।

१) अयोध्या

हर दशहरे भस्म होंगे रावण
लौट आएगे घर
भ्राता-भार्या समेत रघुवर
मगर नहीं यह लाज़िमी
हर बार अयोध्या में दिखे उत्सव
चमक उठे रंगीन आलोक
पता नहीं जानते भी हैं
रामचरित के गायक
रघुवर की एक ही गाथा है
किंतु अयोध्या की
अनेक व्यथा गाथाएं होती हैं।

२) पट्टी खोल दो गांधारी

तुम्हें कहकर देवी गांधारी
चुप रहा था व्यास
किंतु मेरी मासूम बिटिया
तुमसे करती है घृणा
लज्जित अनुभव करती है
और कहती है
जिस क्षण तुमने
इन आंखों पर बांधी पट्टी
उसी क्षण रचा गया था
कुरुक्षेत्र का महासमर

शताब्दियां बीत गई हैं
मगर तुम अभी जिंदा हो
एक बाद मगर पूछू
कैसा आदर्श है यह अंधापन
कौन सा धर्म अंधेपन का समर्थन
ठंडा है दर्पण
और उदास है खिड़की
और उस खिड़की में बंदी बना
तुम्हारा आकाश
पेड़, चिड़िया, मौसम
सुनो गांधारी !
और मेरी भी बिटिया उदास
अब खोल दो अपनी पट्टी !

"बफ पर नंगे पांव"

चौकन्ना सिपाही

बहुत समय से बरादरी के महत्वपूर्ण समाचारों के लिए, सामाजिक राजनीतिक घटनाओं पर कश्मीरी पंडितों का दृष्टिकोण प्रकट करने और राट्रीय अंतर्राष्ट्रीय मंचों में हमारी बात पहुंचाने के लिए एक सुरुचिपूर्ण तथा स्तरीय अंग्रेजी समाचारपत्र का अभाव महसूस किया जा रहा था। यह अभाव विगत १४ सितबर को कश्मीरी पंडित बलिदान दिवस के अवसर पर पूरा हुआ जब 'पनुन कश्मीर' को ओर से 'कश्मीर सेंटिनल' नामक पासिक पत्र जारी हुआ। शतश: बधाई। पत्र के पहले दो तीन अंको में समाचारों, समीक्षाओं तथा मत-मतांतर को बड़े ही संतुलित ढंग से संजोया गया है। तिलो तलाब विस्थापित कैंप के फटे पुराने टेंटों तथा "डॉटर्स आंफ वितस्ता" के अधिवेशन के चित्र बड़े प्रभावपूर्ण हैं। आशा की जा सकती है कि यह पाक्षिक न केवल हमारी राजनीतिक आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करेगा, बल्कि हमारे सांस्कृतिक पुनरूत्थान में भी सहायक होगा।

मोहिनी रैना

कोई भेद नहीं, कोई विवाद नहीं

आज के समय में भक्तों और उपासकों में विवाद खड़ा होता है कि शिव बड़े हैं कि विष्णु। शिवमत वाले शिव को बड़ा मानकर विष्णु को उनका उपासक मानते हैं। इसी तरह वैष्णवमत वाले विष्णु को बड़ा मानकर शिव को उनका उपासक मानते हैं। यह सच हैं कि शिव विष्णु के उपासक हैं और विष्णु शिव के भक्त हैं पर इसका यह अर्थ नही हैं कि ये छोटे हैं और वे बड़े, बल्कि वास्तव में ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। इनको छोटा या बड़ा मानना मनुष्य का अज्ञान और अनभिज्ञता दर्शाता है। यह उपासक की इच्छा और अधिकार है कि वह किस रूप में प्रभु की उपासना करे। इसे विवादस्पद बताना या छोटा बड़ा बताना अज्ञान और मूर्खता दर्शाता है। शिव के नाम से कोसों दूर भागना और उनको छोटी नज़र से देखना उतना ही पाप है जितना विष्णु भगवान के नाम से भागना या उनको छोटा बताना है। देखें तो निर्विशेष परात्पर या अव्यय पुरुष उपासना और ज्ञान के मुख्य लक्ष्य हैं और मनुष्य के जीवन का अन्तिम प्राप्य है। इनमें कोई भेद नही है। जो सर्वव्यापक पालनहार है, उसे विष्णु कह लीजिये। जिसमें 'सब कुछ' समाया हैं उसे शिव कह लीजिये। अन्तर सिर्फ ससझने में है भेद कहीं नहीं है। "शिव सहस्र नाम" में शिव के, और "विष्णु सहस्रनाम" में विष्णु के अनेक नाम आते हैं। इसी तरह कई ऐसे उदाहरण भीं मिलते हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि शिव और विष्णु एक ही हैं। उपासक अपनी रुचि के अनुसार इनकी उपासना करते हैं। आदान क्रिया के अधिष्ठाता विष्णु हैं और उत्क्रान्ति के धारणकर्ता महेश्वर हैं। दोनों क्रियायें अक्षर पुरुष की दो कलाएं हैं। आदान और उत्क्रान्ति दोनों एक ही गति के भेद हैं। जब गति केन्दाभिमुखी होती है तो आदान कहलाती है, जब केन्द्र की विपरीत दिशा में चलती है, केंद्रापमुखी होती है तो वह उत्क्रान्ति कहलाती है। अत: विष्णु 'आदान' है। दूसरे शब्दों में विष्णु उत्पादन प्रदान करते हैं, संसार के पालनहार हैं, कुछ देते है। इसके विपरीत शिव "उत्क्रान्ति" यानी सब कुछ वापिस समेटने वाले सब का संहार करनेवाले। दोनों का स्वरूप एक है, क्रिया अलग अलग है फिर भेद कहां रहा ?

व्याकरण के अनुसार हरि और हर एक ही धातु से बने हैं। मूल धातु दोनों की एक है। फिर कैसे समझें दोनों अलग हैं। दोनों एक दूसरे से छोटे बड़े हैं ? बाहरी दृष्टि में भले ही भेद दिखाई देता हो परन्तु ज्ञानी पुरुषों के लिये कोई भेद नही है। यदि "उत्क्रान्ति" के नेता इन्द्र हैं तो "आदान" का नेता उपेन्द्र (दूसरा इन्द्र)। विष्णु का दूसरा नाम "उपेन्द्र" भी है।

कुछ लोग शिव को संहारकर्ता होने के कारण पूजा के योग्य नहीं मानते, लेकिन यह भूल जाते हैं कि नियति का नियम है जो उत्पन्न होगा वह नष्ट भी होगा और दोनों काम ईश्वर के हैं। समय पर उत्पादन पालन और संहार सब पूर्व नियत है। दोनों ही अपनी अपनी क्रिया में संलग्न है फिर भेद कहां है? शिव स्वरूप कल्याणकारी आनन्द दायक परमहितैषी हैं, तो विष्णु का स्वरूप पालनहार, उत्पादक-कर्ता है। कार्यभेद को अक्षर भेद पुरुष मानना निपट मूर्खता है। जिस समय जिस रूप की आवश्यकता होती है, उस समय वह रूप प्रकट होता है। महेश्वर संहारकर्ता ही नहीं बल्कि तीन अक्षर कलाओं (क्षर, अक्षर, महेश्वर) की भी समष्टि महेश्वर में है। क्षर (अग्नि) (नाश) अक्षर (सोम, आनंद) (अनाशवान) यही तो सारे जगत का पालन करता है। उत्पादक (विष्णु) है। इसी तरह सत्वगुण का नियमन विष्णु करते हैं तो तमोगुण का नियमन शिव करते हैं। शिव का ध्यान करते हुए उपासक उनके परम वैराग्यवान, अत्यन्त शांत विषयनिर्लप्त रूप में करते हैं, वहां तमोगुण के लिए कोई जगह नहीं रहती। 'शम्' शांत शिव, कल्याणकारी, 'कर' करने वाला, अत: शंकर कल्याण करने वाले हैं, फिर तमोगुणी कहां रहे, जिस कारण उनकी उपासना न करें। विष्णु को यज्ञ स्वरूप माना गया है। यज्ञ यानी क्रिया। यज्ञ द्वारा ही रुद्र (अग्नि) आदि देवता उत्पन्न होते हैं। यों कहिए शिवमय संसार में पालन कर्ता विष्णु हैं। सारे जगत में जो यज्ञ (क्रिया) हो रहा है उसी से हमारा समाज हमारा जीवन संभव होता है, वह कल्याणकारी शिव ही है। शास्त्रों के अनुसार, योगियों मुनियों के अनुसार आज तक कहीं पर दोनों में भेद नही किया गया। फिर मनुष्य जाति ने किस चीज़ के आधार पर दो भिन्न मत बनाये और एक अपने आप को दूसरे से ऊंचा समझने लगा। इस तरह मतान्ध तथा झूठे धर्मावलम्बी समाज का कल्याण करना तो दूर रहा, उलटा बड़ी हानि पहुंचाते हैं। भिन्न-भिन्न मतों से हमारा सुसंस्कृत समाज छोटे-छोटे वर्गो में बट जाता है। एकता समाप्त हो जाती है और धर्म के नाम पर मत के नाम पर आपस में ही लड़ पड़ते हैं। भेदभाव, ऊंचनीच की नीव समाज में पड़ने लगती है। आज के समाज में एकता प्रेम, एकमत की आवश्यकता है। हिन्दू समाज को फिर से जाग जाना चाहिये, कि मतभेद में न पडे। शिवमत और वैष्णव मत की बात को लेकर आपस में न लड़ें। इसी से जीव का कल्याण होगा। कही कोई भेद नही झगडा नही है।

"शिवस्य हृदयं विष्णुर्विष्णु:अस्तु शिवं"

मैं अपना तर्क खुद काटता हूं
हां, मैं खुद अपनी बात काटता हूं
मैं विशाल हूं
मेरे भीतर अनेक समूह समाए हुए हैं।

—डी० एच० लारेंस

अटल बिहारी वाजपेयी

तीन कविताएं

निराशा के क्षणों में :

गीत नही गाता हूं
बेनकाब चेहरे हैं
दाग़ बडे गहरे हैं
अपनो के मेंले में
मीत नही पाता हूं
गीत नही गाता हूं ।

★

उत्साह के क्षणों में :

गीत नया गाता हूं
टूटे हुए तारों से
फूटे वासन्ती स्वर

टूटे हुए सपने की कौन सुने सिसकी
अन्तर को चीर व्यथा पलकों में ठिठकी
काल के कपाल पर लिखता मिटाता हूं
गीत नया गाता हूं ।

★

श्रीनगर की वादियों में

न चुप हूं न गाता हू
सवेरा है—मगर पूरब दिशा में
घिर रहे बादल
रूई से धुंधलके में मील के पत्थर पड़े घायल
ठिठके पांव ओझल गाँव
न जड़ता न गतिमयता
स्वयं को ही दूसरों की दृष्टि से देख पाता हूं ।

समय की सर्द साँसो ने
चिनारों को झुलसा डाला
अकेले झील के तट पर खड़ा मैं गुनगुनाता हूं
न चुप हूं न गाता हूं ।

कहीं हम भूल न जायं

पांच वर्ष पूव हम जिस हालत में, अपने घर बार, नगर गांव छोड़ कर जम्मू तथा देश के दूसरे स्थनों में भाग आए, उस से संबंधित घटनाएं हमने कई बार एक दूसरे के सामने दोहराई होंगी और कश्मीर से जुड़ी अपनी यादों को ताज़ा किया होगा, अपने ज़खमों को हरा किया होगा और आँसू बहाए होंगे ! पर समय बीत रहा है और घरों से निकलने की हमारी दुखभरी दास्तान पुरानी पड़ती जा रही है । हमने घर छोड़ते हुए जो पीड़ा सही, वह कल हमारी जाति की कोरी कल्पना कही जाकर भुला न दी जाय इस लिए 'कश्यप समाचार' में एक स्थाई स्तंभ शुरू किया जा रहा है .."कहीं हम भूल न जांय" ! हम अपने पाठकों से निवेदन करते हैं कि वे उन दर्दभरी घटनाओं को एक बार फिर याद करें, जब हमें रातों रात या मुंह अंधेरे अपने भरे पूरे घर और घर से जुड़ी स्मृतियों, भावनाओं, आकांक्षाओं को विदा करना पड़ा था । दुर्भाग्य की किस घड़ी में, किन मुश्किल हालात में हम घर गली मुहल्ले से निकले, रास्ता कसे तय हुआ और यहां कैसे कहां पहुंचे- इस बारे में हमें अपने व्यक्तिगन अनुभव लिखकर भेजिए । हम सहर्ष वह छाप देंगे ।

मोती लाल 'पुष्कर'

रामभक्ति और दर्शन - II

(इस लेख के प्रथम भाग में विद्वान लेखक ने अपना तर्क इस बात पर समाप्त किया कि विशिष्टाद्वैत के अनुसार जीव और जगत ब्रह्म के ही चेतन और अचेतन अंश हैं। संत तुलसीदास ने इसी मत का अनुसरण किया। उन्होंने ब्रह्म के लौकिक पक्ष को चित्रित करके त्रस्त और आपद्ग्रस्त भारतीय प्रजा का ढाढस बंधाया। आगे कहते हैं कि..)

कोई पाठक मेरे वचनों को कालप्रभावित न माने। स्वयं भगवान श्री कृष्ण सर्वव्यापकता की चर्चा में अर्जुन देव से कहते हैं "राम: शस्त्रामृतां अहम्" = मैं धरती की सफे-हस्ती से अत्याचारियों के विनाश के लिए श्री राम शस्त्रधारी का रूप हूं। उस युगमें जब सारा देश अत्याचारों की आंधी से भयाकुल नष्ट-भ्रष्ट हो गया था तो तुलसी ने इसी प्रभु की प्रेरणा से जन जन को धैर्य और सहिष्णुता का उपदेश इसो गाथा से दिया। इतना ही नहीं। राम को केवल ब्रह्मस्वरुप मानने के एवं "राम दशरथ सुत मैं नहिं जानी" गाने वाले कबीर दास जी ने भी १४वीं शती ईसवी में राम नाम की महिमा गाई। "राम" को संस्कृत भाषा के निष्णात आचार्यो ने अर्थ यूं किया:- रमन्ते योगिनो अनेन सह इति राम:" राम यानी जिनके संग योगी २४ घण्टे लगातार लीला करते रहते हैं। कबीर दास के निर्गुण ब्रह्म को तुलसी ने १६वीं शताब्दी ईस्वी में जिस जीवजगत स्वरूप प्रभु का रूप प्रदान किया उसे सभी ने स्वीकार किया। अकबर के सेनापति अब्दुर्रहीम श्री राम के ब्रह्मरूप से इतने प्रभावित थे कि उन्होने संस्कृत कविता में गाया है--

अहल्या पाषाणी पशुरासीन कविचम्:
गुहाऽ भूत चाण्डाल: त्रयं अपिच नीतं तव पदमू
अहं चित्तेनाश्मा: पशुरपि तवार्चादि करणे
क्रियाभिश्चांडालो रघुवर न मां उद्धरसि किम्।

यानी हे रघुवर! तुम मेरा उद्धार क्यों नहीं करते? तुमने पत्थर की अहल्या को पशुओं की सेना वानर जाति को चांडाल गुह को भी मुक्ति प्रदान की, मैं पाषाणहृदय हूं, पूजा अर्चना से अनभिज्ञ पशु हूं और क्रियाओं से चांडाल यानी समस्त मुक्ति के लिए नितांत आवश्यकताओं से मुक्त हूं। यह अब तुम्हारी ज़िम्मेवारी है कि मुझ भवसागर पार करालो।

यही भक्ति भावना जनजन में प्रभुके प्रति उनके गुणों के प्रति विद्यमान है। इसी भक्ति धारा को तुलसी ने अपने "रामचारित मानस" में हरछंद हर बंध हर शब्द हर प्रसगं में पिरोया है। उन्होंने आदिकवि के समान गाया है---

सीता राम गुणग्राम पुण्याख्य विहारिणौ
वंदे विशुद्ध विज्ञानौ कवीश्वर कपीश्वरौ।

यानी वाल्मीकि और पवनपुत्र हनुमंत प्रभु के अमर्यादित मर्यादा-सुशोभित गुणों के प्रति भावुक भक्त ही गिने जा सकते हैं। हनुमंत जी ने प्रभु की रत्नमाला के मनके तोड़ कर यह देखने की शुभेच्छा व्यक्त की कि क्या श्री रामजी का पावन नाम उन मनकों में सुशोभित है कि नहीं। यह रामनाम महिमा स्वयं श्रीराम के द्वारा सागर सेत बांधने के समय प्रकट हुई जब रामनामांकित पत्थर डूबे नहीं स्थिर रहे और सेतुबधंन के लिए आधारशिलाएं बन गए। यह रामभक्ति शिवाजी महाराज के गुरूदेव समर्थ रामदास के चरित में, श्री रामकृष्ण परमहंस देव की बाललीला में स्वयं अभिव्यक्त की है। समर्थ रामदास जी ने किसी भक्त की प्राथना पर 'र म' यह अक्षरद्वय स्मरण करने के लिए दिए। कालांतर में उसे इच्छा हुई कि कोई दूसरा मंत्र लेना चाहिए। दूसरे गुरुदेव ने पूर्व मंत्र वापिस करने का परामर्श दिया। समर्थ जी से कहा तो उन्होने पीने के लिए जल दिया और उसे उंडेल देने को कहा। उस भक्तजन ने वैसा ही किया। जल पत्थर पर गिरा तो वह पत्थर रामांकित हो गया। श्री रामकृष्ण परमहंस बालक थे और मां के साथ किसी गांव को जा रहे थे। रास्ते में वंदर देख कर दोनों मां बालक रुक गए। सैंकडों वंदरों के बीच जाकर परमहंस जी खेलने लगे। मां व्याकुल हुई। वानरों ने श्री राम का रूप जानकर उन्हें फल भेंट किए। प्रणाम किया और खेल कूद में रमे रहे। यह उनकी जन्मजात रामभक्ति का प्रभाव था। आजके युग में महात्मा गांधी जी की रामभक्ति को देखिए। श्री राम का पावन नाम कभी न भूले। आखिरी घड़ी भी उन्होने "राम" कहके ही प्राण त्याग दिए।

आजके नवीन युग में खड़ी बोली के महाकवियों ने अपनी भक्ति को इसी राम नाम के सहारे गाया है। इसी राम नाम की पृष्टभूमि में भक्ति के स्वरुप को दर्शन के तत्व का सहारा प्राप्त हुआ है। जिस भावनात्मक जगत की रचना आत्मचेतन स्तर के धनी एकात्मभाव की स्थिति में पहुंच कर स्वरूप प्रदान करते हैं। उसी बात का विश्लेषण बुद्धितत्वप्रधान मनीषी दार्शनिक व्याख्या के द्वारा अभिव्यक्त करते हैं। हमारे भारतीय दर्शनशास्त्र का आधार आत्मबोध है, आत्म-साक्षात्कर्म है, किंतु विश्लेषण के धरातल पर वह भावनात्मक होने के अतिरिक्त बुद्धितत्व के आत्मतत्व के बारे में किया गया वर्णन ही होता है। हमारे भारतीय चिंतन का प्रमुख स्रोत उपनि द् साहित्य है जो परातत्व को देहस्थ आत्मतत्व के रूप में स्थापित करता है। ईशोपनिषद में आत्मतत्व के साक्षात्कारी ऋषि ने इस भाव को श्लोक में स्थापित किया है—

ईशवस्यं इदं सर्वं यत किंचित जगत्यां जगत्
त्येन त्यक्तेन भुंजीथा: मा गृध: करयचिद् धनम्।

अर्थात जो कुछ इस जगती में विद्यमान है उस सब में उसी ईश का बास है अत: त्याग की भावना से हमें उसका उपयोग करना चाहिए।

किसी का धन झपटने की कोशिश नहीं करनी चाहिए ।

इस उद्धरण में उस परमतत्व की विद्यमानता का उल्लेख हुआ है जो चराचर के अण अण में निवास करता है । यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक जड चेतन में उसी सर्वव्यापक के दर्शन करते हैं तथा "मा गृधः" हमें अपने जीवन को श्री रामप्रभु के आदर्शरूप मर्यादित सर्वस्नेही, सर्वहितकामी जीवन के प्रति सचेत करता है। प्रभु ने स्वयं ही अवतार धारण कर मानव को कल्याण कारी मार्ग का अनुयायी होने की प्रेरणा दी है। यही सच्ची भक्ति है।

(समाप्त)

चिट्ठी - पत्री

दिवाली विशेषांक में कविताओं की कमी बहुत खटकती है। आजकल जम्मू में इतने सारे हिंदी कवि हैं। क्या कारण है कि उनकी अच्छी अच्छी कविताएं 'कश्यप समाचार' में नहीं छपी हैं ? आशा है आग आप हमारी इस विनती पर गौर करेंगे।

—नीति कौल
गांधी नगर, जम्मू।

✻

पहले 'जन्माष्टमी अंक, फिर उसके बाद 'दशहरा-अंक' अब तीसरा अंक कौन विशेषांक होगा ? दीवाली का ? विशेषांक निकालना कोई बुरी बात नहीं पर किसी भी पत्रिका का साधारण अंक भी उतना ही जरूरी होता है जितना विशेषांक। साधारण अंक में कविता-कहानी भी होती है, विशेषांक में नहीं।

— मोती लाल पंडिता
बनतालाब, जम्मू।

✻

'दशहरा / दिवाली अंक' कल मिला । धन्यवाद । अंक में कई आकर्षण हैं, खास तौर पर 'राम भक्ति और दर्शन' । इस में लेखक ने गागर में सागर भर दिया है। मेरी बधाई।

—काशी नाथ रैना
तोप शेरखानियां, जम्मू।

✻

आपकी पत्रिका में मुझे भगवान राम और विजया दशमी से संबोधित अच्छे और स्तरीय लेख पढ़ने का अवसर मिला। आपका प्रयास बड़ा भशंसनीय है। आप न केवल अपनी बरादरी के विद्वान पाठकों को अच्छी सूचनाएं देते हैं, बल्कि उनका ज्ञानवर्धन भी करते हैं। 'कश्यप समाचार' का हिंदी भाग एक अच्छा साहित्यिक प्रयास पेश करता है।

—सुलोचना गुप्ता
गवर्नमेंट कालेज फार विमेन
परेड ग्राउंड, जम्मू।

कश्यप समाचार (का'शुर बोग)

का'शुर लेखनुक परनुक त'रीकु'

1) का'शिरि आवाजु' (स्वर)

   1. अ' = अ'छ, च'र, ग'यि, ब'ल्य्
   2. आ' = आ'ठ, रा'छ, ज़ा'च़ल, अका'य, रगा'ड्य
   3. उ' = तु', च़ु', बु', बतु', नतु', अ'दु'र, क'च़
   4. ऊ' = तू'र, कू'त्य्, सू'त्य्, ऊ'ठ्युम
   5. ए' = मे', चे', रे'ह, बे'नि, महारे'न्य्
   6. ओं' = ओ'दुर, अपो'र, चो'ट
   7. -य् = तीत्य्, क'म्य्, ज़ा'न्य्कार, म'ल्य्
   8. व- = क्वस, न्वश, स्वछ, ग्वबि ख्वरु'

2) का'शिरि आवाजु' (व्यंजन)

   1. क, ख, ग, च, च़, छ, छ़, ज, ज़, ट, ठ, ड, त, थ, द, न, प, फ, ब, म,
      य, र, ल, व, श, स, ह, त्र

3) हिंदीयिक्य् स्वर ऋ (ृ), ऐ (ै), औ (ौ) विसर्ग (:) तु' व्यंजन घ, झ, ढ, ध, भ, ष, क्ष, ज्ञ तु' अनुनासिक 'ण' हुक इस्तिमाल करव अ'स्य् सिरिफ नावन (व्यक्तीवाचक संग्यायन) मंज़। मसलन कृष्ण, वैतरणी, घनश्याम, भारत, झारखंड, ढाका, धनवती, लक्ष्मण, ज्ञानेश्वर, श्रीकण्ठ ।

★

संपादकी

असि क्याह छु सरुन सोंचुन ?

यि छु महज़ इतिफाक ज़ि 'कश्यप समाचारु'क्य्' ग्वडनिक्य् जु अंक द्रायि खा'लिस दार्मिक मज़मूनन प्यठ। दरअसल युथुय युहुस कश्मीरी पंडित सभायि हुंद नो'व चुनाव सपुद, यि पत्रिका

नवि ज़ुव ज्यतु' सान कडनुक इरादु' ति आव तमी विज़ि करनु'। जन्मु' सतम आ'स यिनु' वाजे'न्य्। फा'सलु' को'रुख ज़ि ग्वडन्युक अंक आसि जन्मष्टमी अंक। पतय ओस दशहार तु' देवा'ली। दो'यिमिस अंकस ति द्राव मोकु' तु' बहानु' बन्यव बे'यि अकि खास नंबर कडनुक। बहर हाल यिम ज़ु' नंबर वुछिथ हय।'तुन सान्यन वार्याहन परन वाल्यन यि बासुन ज़ि सभा छे' सिरिफ बगवथ नावस ल'ज्यमु'च। केंचंन लुकन ओस गिलु' ज़ि असि बटन छि वुन्यकिस बे'यि वार्याह मसलु' यिहुं'ज़ न'वियथ सिरिफ मज़हबी छनु'।

असि छु ये'मि कथि हुंद एहसास ज़ि बाकय समा'जी क्यो सिया'सी मसलु' ति छि सोन तवजुह मंगान। अ'स्य् छि लगातार कूशिश करान ज़ि यिमन मसलन प्यठ ग'छ्य् सा'न्य् लेखक लेखु'न्य्। अ'स्य् छि योंरु' ति तिमन ज़ोर ज़ोर दिवान। अमापो'ज़ पज़र छु यि ति ज़ि का'शिरिस मज़ खासकर छिनु' वुनि गद्य (प्रोज़) लेखन वा'ल्य ज्यादु'। असि छु वार्याह मसालु' सिरिफ नज़्मि रंगी वातान। सिरिफ कवितायि, गज़लु' वगा'रु'। अ'स्य् छि बे'यि अकि लटि पनु'न्यन प्रब्वद लिखार्यन व्यनती करान ज़ि पनु'न्य लेख सूज़िव। यि केछांह तो'हय् वनुन छिवु' यछान। यिछ़ ति तुहुं'ज़ ज़बान छे'। अ'स्य् शेरव पा'रव स्व यथाशक्ती। अ'स्य् मथव स्व अ'छन। सिरिफ क'र्य्‌तव कूशिश नागरी अछरन मंजु'य लेखनु'च। साफ साफ खुलु' डुलु'। युथ नु' परनस थ्वस यियि।

अ'ज़िकि ख्वतु' छुनु' कांह वख ज्यादु' मोज़ून ज़ि अ'स्य् हय्मव पानस साम। पनु'निस सोंचस समजस। पनु'निस व'तीरस। आ'खु'र अ'स्य हय वतु' वला'य ग'यि तु' क्याज़ि? व्वन्य् क्याह छि सा'न्य् सूरति हाल। व्वन्य् छा असि पानस तार दिनुक कांह स'बील करुन किनु' न। यिथ्य् ही छि वारियाह सवाल यिमन प्यठ असि सरुन सोंचुन छु।

वारियाह पारटियि छे' सानि। सान्यन मुख्तलिफ फिकरी दर्यन हुं'ज़ नुमायंदगी करान। अथ प्यठ छनु' हा'रा'नी या मोयूसी ज़ा'हिर करु'न्य्। आम पा'ठ्य् हयों'द तु' खासकर बटु' छु चूंकि ज़ा'विजारन सनन वोल। कथि पूर' पा'ठ्य् वाश क'डिथ अदु' मानन वोल। हें' दिस छुनु' कांह दार्मिक हुकुम ज़ि बस यि कथ मा'न्य ज़ि अ'छ व'टिथ। (ग्वड छु न अजकल किस ज़मानस मंज़ कां'सि पनुन वो'लितु च'टिथ न्यबर नेरनस चारु'।) अवय छि असि मंज़ अ'ड्य् अख कथ वनान तु' अ'डय् ब्याख मगर कुलस प्यठ छि अ'स्य् मुतफिक। यथ प्यठ अ'स्य मुत्फिक छि तथ हय्कव अ'स्य् ज्यव दिय। मसलन यि कि आ'खरस छु असि वापस क'शीरि तरुन। यि ज़ि ग्वतान्य् सु मुमकिन सपदि त्वतान्य् छु असि कुनि जायि ठिकानु' ह्यु'न तु' पनु'नि बजा'यी बापरजा'यी खा'तरु' कदम तुलुन। सब्यता संस्क्रती रछिन्य्। असि छि का'शुर आसनु'च अका'य पछान—सा'न्य का'शिर ज़बान। यि छि असि रछिन्य्। यि छि शुर्यन हय़छनावु'न्य। अथ मंज़ छु असि लेखुन परुन। अम्युक अम्युक म्वलुल सरमायि छु र'छिथ थवुन युथ नु' गालखातस गछि। वगां'रु वगांरु। यिम छि सा'न्य कल्चरल मसलु'। यिमन मुतलिक क्याह छि अ'स्य् सोंचान-सरान? सियासतु' अलावु' छि यिथ्य् ही मसलु' ति सा'न्य् जरूरी मसलु' ग्वतान्य् अ'स्य् यिमन प्यठ सोंचान रोज़व त्वतानी छि अ'स्य ज़िदु'। नतु' छु सोन आसुन न आसुन बराबर।

(त्रन कु'रतन मंज़) डॉ० अमर मा लम

दुर्गा दुर्गति नाशिनी-[

(डॉ० मालमोहो छि सानि क'शीरि हुं'द्य् नामावर कहानीकार नावलिस्ट, शा'यिर नाटककार तु' थदि पायिक्य् दा'निशवर। का'शिर जबा'न्य्, इतिहास तु' संस्कृती प्यठ छु यिमव वार्याह केंह ल्यूखमुत। यथ जीठिस लेखस मंज़ छु दीवी मुतलिक युहुंद तहकीका'ती सोंच सा'निस अ'ज्य्किस प्रसंगस मंजं बडु' नफीस पाठ्'य् पेश करनु' आमुत। अमर जी छि अज़कल एम० ए० एम० (कैंप) कालेजस मंज़ उर्दू प्रोफेसर।)

देवि ! त्र्यंबकपत्नि ! पार्वति ! सति ! त्रैलोक्य माता ! शिवे !
शर्वाणि ! त्रिपुरे ! मृडानि ! वरदे ! रुद्राणि ! कात्यायनि !
भीमे ! भैरवि ! चंडि ! शर्वरि ! कले ! कालक्षये ! शालिनि !
त्वतपादप्रणतान् अनन्यमनस: पर्याकुलान् पाहि न: !

पज़र छु यि ज़ि बदलवु'न्यन हालातन मंज़ छुनु' का'शिरिस बटस बहसियति इनसान ज़िंदु' रोज़ुन कांह बो'ड मुश्किल तिक्याज़ि सु छु च्वदा'हिमि स'दी प्यठु' बदलवु'न्यन हालातन हुंद हमेशि शिकार सपदान रूदमुत तु' च़लुन गलुन छनु' त'म्य् सुं'दि खा'तरु' कांह न'व कथ। मगर बटु'सुंद मसलु' छु यि ज़ि तस छु बहसियति का'शुर बटु बह'सियति का'शुर पंडित ज़िंदु' रोज़न तु' यिम बटु' च्वदा'हिमि स'दी प्यठु' च'लिथ पतु' क'शीरि कुनि वजहु' किन्य् वापस आयि नु' तिमन रोव पनु' पनु' का'शुर आकार ति क्याज़ि व्वपर जायन प्यव तिमन छ'करिथ रोज़ुन। तिमन रा'व हनि हनि पनु'न्य् सा'रय कोमी पछान, ये'मिक्य् अहम अनसर ज़बान रसु'म तु' अ'कीदु' छि। अज़ कालु' क्यन गटु ज'ल्य् हालातन मंज़ अगर का'शिरिस बटस ज़िंदु' रोज़ुन छु ते'लि छि तस पनु'नि ज़बा'न्य् रस्मन तु' अकीदन रा'छ करु'न्य्। लफज़ि रस्मु' सू'त्य् छु' नु म्योन मतलब तिम समा'जी रसु'भ यिमव का'शुर बटु' अं'दरी ख्वखुर को'र, ब'ल्यकि तिम रसु'म यिमन अ'स्य् कर्म कांड व निथ ह्यकव या यिमन सान्यन बड्यन दो'हन हुं'दिस मनावनस सू'त्य् तोलुक छु। बु' दिमु' मिसाल। पन द्युन छु सानि कल्चरुक अख अहम अनसर तु' ओरु' योर न'वीद सोज़ुन छु समा'जी रा'बितु' खा'तरु' ज़रूरी, मगर कोरि न'वीद सोज़नस मंज़ पनुन ख्वखुर बजर वर्तादुन छे' बेवकूफी।

यि छे' दिलचस्य कथ ज़ि नवरात्रन सू'त्य छु बगवान'रामु सुंद द्वह यिवान। चितरु'

नवरात्रन हुं'ज़ नवम छे' रामु' नवम आसान तु' आ'शिदु' नवरात्री हुं'ज़ द'हम छे' दशिहार आसान, येमि दो'हु' बगवान रामु' संदि अवतारुक मकसद पूरु' सपुद । का'शिर्यन हुं'दिस दिलस मंज़ य्वदवय मर्यादा पुरुषोतम सुंद का'फी बजर तु' लोल छु मगर तिहंदि खा'तरु' छनु' रामु' नवम या दशिहारस स्व अहमियथ य्वसु' नवद्वर्गायि छे । यहोय वजह छु ज़ि रामु' नवम तु' महानवम द्वहु'आ'स्य् बटु' च़रवन-त'ह'र बमावान, च'करीश्वर तु' बा'रवन चो ट थावान तु' मामस रनान, य्वदवययि शास्तरु' रंगु' बिल्कुल ना रवा ओस । का'शिर्य बटु' आ'स्य् जो'म च़लु'नस तान्य् खासकर तिम यिहुं'ज़ य'श्ट दीवी शारिका आ'स, चो़रु'म तान्य् मामस ख्यवान ।

व्रों'ह कालु' आ'स्य् वार्याह का'शिर्य बटु' नवरात्रन हु'न्द्यन नवन दों'हन मंज़ नव द्वर्गायि हुं'ज़ पूज़ा करान मगर जदीद ता'लीम शा'रु गछ़नु' पतु' गयि वखतु'च कमी हुंन्दि कारनु' यि पूज़ा हनि-हनि कम गछ़ान तु' सन् 1947 ई० पतु' गयि बिलकुल कम तिक्याजि का'शियन हुं'न्ज़ नवद्वर्गा छें' अख पीचीदु' पूज़ा 'न ज़ि यिजि अदु' थ'व्य अ'त्य व'श्कु' द'ह-वुह फ'ल्य् कुनि ल्वकटिस बानस मंज व'विथ ताखचस प्यठ तु' बाकय कोर' चोंरव-पांचव जनानव शामन डोल वा ' यिथ ग्यवुनाह। का'शिरि नवद्वर्गायि आ 'स्य् गांटुवादु लगान तु' यि पूज़ा छे' ज्यादु' पहन राथक्युत सपदान। प्रथ दो'हु' ओस हेरि न्वनु' लिवुन डुवुन आसान तु' सोरुय ओस दु'हंमहुन्द करनु' यिवान । यि ओस नु' बदलेमत्यन हालातन मंज़ सहल-। द्वर्गायि तु' यि पूज़ा बिलकुल खतुम' सपु'ज़मु'च़ मगर लूकन मंज़ ग'यिनु' द्वर्गायि हु'न्ज़ श्रदा ज़ांह कम तु' माजि दीवीहुंद यि लोल छु सानि संस्कृतीहुन्द अख नुमायां हिस' तु' अगर यि लोल आमपा'ठय् सान्यव दिलव मंज़' रा'स्य सपुद ते'लि रोज़व नु' अ'स्य् का'शिर्य बटु' अ'थ्य् लोलस का'म हयथ करव तस माजि हुन्ज़ जलवु' गरी ज़ रछ़ खंड ज़ान य्वसु असि परबतु', तुलु'मु'लिहुं' ज्यीठय्या'र, व्वमायि, टु'करू' तु' व्यतस्तायि हु'द्यन वा'रान बठ्यन प्यठ अज़ति प्राश्न तु' छ़ारान छे' । यि छे' अ'म्यसु'य माजिहु'न्ज यछ़-प'छ़ ये'मि असि प्रथ गटु'कारस मंज़ तु' आ'वु लु'निस मंज़ ज़िन्दु' रोज़नुक होसलु' द्यु त ।

आंथ्रोपालोजी हुन्द मुतालु' क'रिथ छु ननान ज़ि माज़ि बगवती हुन्ज़ पूज़ा क'र इनसानन पनु'नि वनवा'स्य् ज़िन्दगी मंज़'य शरु तु' यूत-यूत अ'मिस तिहुंदुय निखार हा' सिल रोज़ान गव त्यूत-न्यूत गय माज़ि बगवती हु'न्ज़ि पूज़ायि तु' तसवुरस ति जहतु' (Dimensions) हुरान । का शिर्यन मंज़ छु दीवी पूजायि हुन्द अनहार न्यरल तु' बरपूर । सा'र्य सु'य हिन्दोस्तानस मंज़ छु सिरिफ का'शिर्य बटु' अख कोम यथ कांह य'श्टु' दीव छनु' अम्यक छु यि ज़ि का'शिरिस बाग्यव नु' माजि दीवी रोस्त किहीं अमली पज़र । का' शिरिस खा'तुरु' ओस नु' तु' माजि दीवी हुन्द तसवुर अख खया'ली (Speculative) पज़र तु' तान्त्रिक आयि आ'स यि अख अमली सदाकत । अवय

यिहय दीवी सारिनु'य का'शिर्यन यश्टु'दीवी पनु'न्यन अलग-अलग रूपन मंज़। यि छु अ'म्य सु'य माजिहुन्द लोल ये'म्य् अज़ का'लु' क्यन चलि-म'त्यन अथि जानीपोरु', बग'वती नगरु' तुलुमुल बनावु' नोव तु' बोंठकालु'क्यन अथि अम्व फला बटु' मंग्रस मंज़ तुलुमुल्य् नाग।

का'शिर्यन यस बगवती हुन्द तसव्वुर छु सु छु अख अलग नवीयथ यवान। अमलन छु नु' आम का'शुर दीवी हुन्द कांह फलसफियानु' तसव्वुर थवान ब'ल्कि छु तस अ'मिस सू'त्य् अख ज़ा'ती 'रिश्तु'। सु रिश्तु' युस शुर्यन माजि तु' माजि शुर्यन सू'त्य आसान छु। अवय छु सराफ वनान :-

शुर छुस मा'ज्य बवा'न्य च्येय रो'स खोचान
सू'त्य-सू'त्य आसतम रोज़ा'नी
पो'तु'र छु जगतस मंज़ पा'दु' सपदान
क्वमाता क्वमाता जांहति छनु' वनान

तु' यि रिश्तु' छु का' शिर्यन हुन्द भवा'नी सहस्रनाम तु' पंचस्तवी जान पा'ठ्य् बदि कडान :-

चानि बापथ दनु' खरु'च को'रुम नु' अज़ताम
वनुकस तु' दनु'चे' पथ छुसनु' खरचान
तोति चु' स्वय मा'ज्य्
यस छु म्योन स्रो'ह तु' माहवत ग्वसु' छम
म्ये' गरिगरि रछान।
क्वो' तुर पो'तुर जगतस मंज़ पा'दु' सपदान
माता क्व माता जांहति छनु' वनान (पंचस्तवी तरजर्मु सराफ)

शिव गव सु ये'मिस मंज़ जगथ गुपिथ आसि। यि शिव छु ते'लि परमीश्वर या ब्रह्म ये'लि अ'मिस पांछ शखतियि आसन यिमन मंज़ ज्यादु' वनि तु न'नि यछा शखती, ग्यानु शखती तु' क्रेया छे' ३६ तत्व या अनसर। शिव छु न' शखती रो'स्त किहीं। शखती-अथवास छु शिव त्रे'यलूकी सा'मी तु' कल्यान का'री बनान तु' अमि किन्य् छे शिवस ख्वतु' अहम तु' तस निश वातु' नावन वाजे'न्य् फकत शखती।

का'शियन हुन्द शखती तसव्वुर छु तान्त्रिक तु' रछखड छु अथ प्यठ प्वरानुक असर ति, ति क्याज़ि काशिर्यन हुंज़' दीवी छि तिम नाव ति दिनु' आमु'त्य यिम प्वरानन मंज़ मेलान छि। यि छे' सरस्वती याने 'वसन वाजे'न्य (the flowing one) सरस्वती छु ऋग वीदस मंज़ जरखीज़ी तु' पव्य'तरतायि सू'त्य तोलुक यि छे वा'गीश्वरी (जबा'न्य हु'न्ज़ दीवी) ब्रह्मी तु महाव्यद्या अ'लिम फन, ग्यान तु'व्य'ग्या नु'च दीवी आसनु' मूज़ूब स्यठाह तीज़ु'वान। यि छे' राज़ु' होंज़स (विवेक, त'मीज़) तु' बाज़े मोरस (किबु'र, ज़ा'हिरी हुसुन) सवारि खसान। आम पा'ठ्य छि अ'मिस दछिनिस अथस मंज़ ज़पु' माल तु' खोवरिस मंज़ किताब आसान। अम्युक मतलब गव ज़ि मा'दी या किता'बी अ'लिम तु' रूहानी अ'लिम छु ज़ोरू'री। मगर वा'तिनी अ'लिम छु सरस। ग्यान प्रावनु' खा'तरु' छु वे'ग्यान ज़रूरी तु' अम्य् सुन्दि मुताबिक छि अ'स्य शरीरु'च ब्वछि त्रेश वे'ग्यानु' सू'त्य तु' आत्मु'च त्रेश ग्यानु' सू'त्य् छ्य'वरान।

दीवी हुन्द ब्याख अनहार छु लक्ष्मी यि छे' श्री तु यि छे' भार्गव रे'श्य सु'न्ज़ कूर

ति तु' सो'दरु' मंज़ु' खसनवोल अहम र'तु'न ति यिहय छे वामनु' सु'न्ज़ पद्मा परसरामु'न्य् धारिनी रामु' सु'न्ज़ सीता तु कृष्णु' सु'न्ज़ रु'खु'मन। पम्पोशस प्यठ बे'हनु' किन्य छु अ'मिस कमला ति नाव। हिन्दुस्तानस मंज़ छि नु' लक्ष्मी मंन्दिर आम पा'ठ्य लबु'नु' यिवान तु' कशीरि मंज़ आ'स्य् नु' ऊतरु' तान्य् अ'म्य मुन्ज़ कांह वखरु' पूज़ा सपदान मगर क'शीरि न्य'बरु'मिस तान्त्रिकस मंज़ छे यि अख अहम किरदार थवान ति क्याज़ि हिन्दुस्ता'न्य् तान्त्रिक छु नु' फ़कत यूगस बलकि बूगस मंज़ ति वे'शवास थवान। लक्ष्मी छि वारयाह नाव यिमन मंज़ श्री (ख्व'श कु'समती) प्रीति (माय) क्रति (गिन्दन वाजन्य, शालिनी (शूब) तुष्टि (त्रफती, लुतुफ) पुष्टि (बल) वेतरि छे'।

(दिसंबर' 94 अंकस मंज़ जा'री)

प्रो. सरला कौल

कुनिस ज़'निस नो ज़ांह तार लगी

तापनि चजे पान चे' ज़ोलुथ
उफ ति मा को'रुथ ॥
खू'मु' जंदन तल प्राण च' त्रा'विथ
उफ ति मा को'रुथ ॥
सर्पन का'त्याहन पान च' दितुथ
तोति पो'चुख ना ॥
पनु'नि वतनु' मंज़ु' परदीसी गोख
उफ ति मा को'रुथ ॥
यारव बा'यव मंज़ नावि त्रोवुख
तोति फो'दुख ना ॥
कम जंदु' शिखु'र्य चे' ना'ल्य त्रा'विथ
उफ ति मा को'रुथ ॥
पनु'न्यन हुंछ' काम इलज़ाम चा'लिय
पान छो'पुथ ना ॥
पानय पानस दिलासु' दितुथ
उफ ति मा को'रुथ ॥

राशन काडन हुं'ज़ि ला'नि ब्यूदु'ख
ज़ानस् वुछुथ ना ॥
रिलीफ़ दु'बर्यन प्रान च' छोवुथ
उफ ति मा को'रुथ ॥
कम कम नाव ह्यथ पामु' च' चाजथ
बरदाश को'रुथ ना ॥
हांगुल वो'नुहयी दफ चा'न्य् ह'कीकथ
कां'सिति प्रज़ना'व ना ॥
क'शीरि मंज़ पान हचरज़द ज़ोनुथ
ल्वति पा'ठ्य चो'लुख ना ॥
कुनिस ज़'निस् नो ज़ांह तार लगी
ती च' ज़ोनुथ ना ॥
तापनि चजे पान च' ज़ोलुथ
उफ ति मा कोरुथ ॥

★

—डॉ० द्वारकानाथ दुरानी

श्री राम तु' श्री कृष्ण—II

(ग्वडनिकिस हिसस मंज़ को'र ये'मि लेखु'क्य् व्ये'ध्वान लिखा'र्य् बगवान सु'न्द्यन यिमन द्वन अवतारन हुंज़ि ज़िंदगियि तु' कारनामन मुकाबलु' क'रिथ दरअसल श्री कृष्णु' सुंज़ि भगवदगीतायि मुतलिक व्यस्तारु'सान पनु'न्यन खयालन हुंद इज़हार। अ'थ्य् सिलसिलस मंज़ छि ब्रों'ह कुन वातान—

श्रीमद् भगवदगीता छि श्री कृष्णु' सुं'दि रूपुक अक्स। गीतायि मंज़ पानु बगवान वनान—
ये यथा माम् प्रपद्यंते तांस्तथैव मजाम्यहम्।

युस कांछाह् ति येमि बावनायि मे' बजान छु बु' छुस त'मिस तमी रूपु' किन्य् ब्रोंह कुन यिवान। श्रीमद्भगवद गीतायि मुतलिक छे' यि कथ स'ही। ये'म्य् येमि बावु' अथ व्यूर तुल त'मिस बासेयि तमी शक्लि। तो'हय हे किव वुछिथ बड्यन बड्यन स'न्यास्यन हु'न्दिस ठलस मंज़ यि किताब। बडयव बड्यव इन्कला बियव ति छि पिस्तोल तु' बन्दूक सान अथ पनु निस महलस मंज़ जाय दिच़मु'च़। प्रथ वरन आश्रमस सा'त्य् सम्बंद थवन वा'ल्य् छि अथ प्यठ यछ़ पछ़ थवान। तु' यिमव नु यि किताब ज़ांह् वुछमु'च़ न प'रमु'च़ तिमन ताम छु अभ्युक से'ठाह् आदर। कसम आसि ख्यो'न अदालतस मंज़ तु' अमि वरा'य अंदि नु'। अथ प्यठ आयि हतु' ब'द्य् बाशन दिनु' तु' तबसरु' करनु'। ग्यान योग, कर्मु' योग' उपासना योग, ध्यान योग, कर्म सन्यास, द्वैत वाद, अद्वैतवाद, शुद्ध अद्वैतवाद, विशिष्ट अद्वैतवाद, द्वैत-अद्वैतवाद आदि थवन वाल्यव छि हतु' बजु' किताबु' अथ आसमा'नी किताबि हु'न्दिस तफसीरस मंज़ लेछमचु' तु' सारिवु'य छु दावा को'रमुत कि गीतायि मंज़ तिहुन्दुय नज़रयि पेश आमुत करनु'। लोकमान्य श्री बाल गंगाधर तिलक जियन छु पननिस "गीता रहस्य" किताबि मंज़ ल्यू खमुत कि अख तफसीर "पिशाच भाष्य" नावुक ति छु गीता जी मुतलक अ'मुत लेखनु'। गर्ज़ गीतायि मंज़ छु सु आकर्शन ज़ि जान नाकारु' हितमागी, वाम मार्गी छि ओरकुन आकृश्ट सपदान। वुछुन छु यि ज़ि गीतायि हुन्द असली स्वरूप क्या छु। अथ छा पनुन कांह स्वरूप किनु' यि छु अख मोमु' प्रछ़ या गोरख-दंदु'। अथ छा पनुन त्यूत दर्यर किनु' मोमचि नसति हुं'द्य पा'ठ्य योरकुन फिरहोन तोर कुन फेरि।

भगवत गीतायि मुतलक छु यिवान यि वनु'नु' ज़ि ये'म्य् अथकुन वुछ त'मिस आयि पननी सूरत नज़रि। आ'नस मंज़ अमिच असलीयत वुछनु' बोंह ये'लि वुछन वा'लिस पननि अकसुक न्या'ल गालुन याने गीता समजनु'

ब्रोंह पज़ि मनशस पनुन नजरयि, मत तु' अंदाज़ि फिकिर दूर त्रावुन, नतु' हे'किनु' सही तत्व ग्यान हा'सिल सपदिय ।

बगवान् श्री कृष्णु' सुंज़ु' मोमूली लीलायि तु' फोक फितरी ताकतुक तु' शक्तीयन हुन्द अंदाज़ु' सपद्यव तिहुं'दि ज्यन' कालु' प्यठय । परनस, लेखनस, हे'छिनस छुनु' तथ सा'त्य् कांह तोलुक । भगवत गीता छि असि ब्रोंह कनि अज़ ति । संसारु'क्य् सोंचन वा'ल्य् छि वारु' वारु' अथ कुन ज्यादय पहान आकृष्ट सपदान । अथ छुनु' कांह शख ज़ि य्वसु' गीता असि निश छि स्व छि महरे'शी बेद व्यास जीयिन्य् तरतीब दिचमु'च । श्री कृष्णन युस अज़ली अबदी पा'गाम अर्ज़नस द्यु'त, पननि दिव्य द्रे'ष्टी सू'त्य् द्यु'त मेहरेशियन स्व तमी अंदाज़ु' तरतीब । महरेशी व्यास अ.स हे'कान बे'यिस ति दिवि द्रे'श्टी दिथ । महाभारतुक य्वद वुछनु' खा'तरु' वो'न त'म्य् धृतराष्ट्रस ज़ि अमर चु' यछख गंगुक मुशा'हिदु' करुन, बु' दिमय दिवि द्रे'श्टी मगर धृतराष्ट्रन वो'नुस ज़ि पननि कबीलु' क्रान्युक फान क्या वुछु' बु' ? हाँ बु' बोज़हा हाल । अमि पतु' क'र महरे'शी व्यासन संजयस दिवि द्रे'श्टी अता तु' सु रूद अंदसताम धृतराष्ट्रस जंगु'क्य् हालात बोज़नावान महरे'शी वेद व्यास ह्यव ग्य'ानी, त्या'गी, अद्यात्मिक शक्ति वोल शख्स-अमा अ'मिस क्या फा'ज़ वोत श्री कृष्णु सुन्द पा'गाम तिहंदी नावु' तरतीब दिनु' सूत्य । महज बख्ती तु' बे'यि नु' कें'ह । अवय म्वखु' छु महरे'शियन स्यठाह आदरु' तु' सतकार' सान श्री कृष्णु' सुं' द्य् व्य चार पेश क'र्य्'मु'त्य । अन्दाज़'क'र्यतव यस श्री कृष्णस महरे'शी वेदव्यास ह्यव बख्त आसि त'म्य' सुन्द पाय कोताह् बो'ड गछि आसुन । बगवान् श्री कृष्णु' सुन्द अख खास वसफ छु यिहोय ब्रोंह कुन यिवान ज़ि पनन्यन हम कालयन थ'दि पायि क्यन ग्या'नियन, विग्या'नियन, दर्मातमाहन, तपस्वीयन, महरे'शियन, शूरवीरन, पहलवानन गा'जियन, राजन, महाराजन ओस तु'म्य् सुन्द से'ठाह आदर तु' कदर दिलन मंज़ । व्यास ह्यव महरे'शी, युधिष्ठिर ह्युव दमतिमा. विदुर जी हयुव कोनून दान, धृतराष्ट्र हयुव ओ'न, अर्जुन तु' भीमसेनस हिव्य् शूर वीर' महदेवस हिव्य् ग्या' नी कुन्ती माता नु' द्रौपदी हिशि गाटजि ज़नानु' तु' भीषम पितामहस हिव्य् पराक्रमी, बलवीर महात्मा आ'स्य् अहंद्यन चरनु' कमलन मीठय् दिवान । यि अख कथु'य छि श्री कृष्णु' सु'न्दि पूरन (शुराह कलायि) अवतार आसनु'च ब'ड दलील ।

भीष्म पितामह सु'न्दि बजरु' निश छु प्रथ कांह वा'कु'फ । अ'मिस आ'स्य् वनान 'इच्छा-मृत्यु' याने पननि मर्ज़ी मरन वोल । यि ओस परशुराम सुन्द ति उस्ताद फनूनि जंगस मंज़ येलि भीष्मन पनुन जलाल तु' गज़ब ह्यो'त ह्यावुन अर्ज़नस बास्यव यहोय अख शुराह तस बो'ह कनि । सारिनु'य बास्यव ज़ि पांडव मो'कलेयि ब्वन्य । पानु' बगवान कृष्ण ति गव ख्यूबस ज़ि युधिष्ठिर सुन्द फोज गछि खत्म तु' सा'री दिवता तु' दानव ति वातन अन्द । अमि विज़ि को'र श्री कृष्णन प्रथवी प्यठ पापन हुन्द

बोर लो'तरावनु'च यछा शख्ती सू'त्य सुदर्शन चक्रुक ख्याल। सुमरन क'रिथु'य वोत चक्र तहं'दिस अथस मंज़ तु' ह्यो'तुन कोरवन हु'न्दिस लश्करस कुन पकुन। भीष्मपितामह रात्र यि वुछिय बयवीत तु' हे' चु'न वगवानस तो'ताह करु'नि। "ही बगवानु' मे' म्वकलाव तु' ये मि संसारु' कि ज़ालु' मंजु। चानि हमलु' तु' म्यानि मरनु' सा'त्य् बडि म्या'नी प्रो'तश्ठा सा'रिसय संसारस मंज़। लुख वनन यि ज़ि भीषम छु दन्य ज़ि पानु' बगवानस प्यव युन त'मिस मुकाबल' करनु' खा'तरु' हालांकि प्रतिग्या पे'यस फुटरावुन्य् ज़ि महाभारतकिस य्वदस मंज़ तुलि नु' सु पानु' कांह ह'थियार अथस मंज़।

पो'ज़ छु यी ज़ि भीष्म पितामहस आ'स बगवान सु'न्ज़ पुरु' पा'ठ्य् पता। तो तिगव तस दिलस त्रास ज़ि 'इछा मृत्यु' वर आसनु' बावजूद हे'कि नु' यि बगव नु' सु'न्दि प्रकोपु' निशि ब'चिथ नु' वानुन बगवानस ज़ि चानि अथु' मरुन आसि म्या'न्य् ब'ड इक़बाल मंदी।

युधि ष्ठिर सु'न्दिस राजसूय यग्यनस मंज़ वो'थ यि सवाल ज़ि ग्वडु' क'मिस गछि पूज़ा करनु यिन्य्। युधिष्ठिरन वो'न ज़ि महा यग'नी, ज्युठ आ'लिम तु' फा'ज़िल, सा'न्य् मंज मशवरु' युन करनु। भीष्म पितामहन को'र केच़स कालस छो'पु' पो'तुस वो'नख युस ज़न तारकन मंज़ सिरिय सुय्य् पा'ठय् गाह त्रावान त' सारिनुय राज़न बल पराक्रम तु' तीज़ बा'गरावन वोल छु तस रावानस क'रितव ग्वडु' पूज़ा। यिथु' पा'ठ्य् सि'रियि स'न्दि गाशु' तु' हवाहकि चलनु' सा'त्यि् छु संसारस मंज़ आनन्दुक बास सपदान तिथय पा'ठ्य् छु बगवान कृष्णु' सु'न्द अनुग्रह तु' बजर यथ सबायि आनंदित करान। यिहंदि वरा'य गछि यथ सबायि ती यि ज़न हवा तु' गाशि रो'स संसारस गछि। एष ह्येषां समस्तानाम तेजोबल पराकमै: मध्ये तपन्निवा भाति ज्योतिषामिव भास्कर: असूर्यमव सूर्येण निर्वातमिव वायुना भासितं ह्लादित चैव कृष्णे नेदं सदी हिन: यि बूज़िय ख'च़ शिशुपालस चख तु' भीष्म तु' श्री कृष्णस कुन वो'नुन चख़ि सान। भीष्म जीयन वो'नुस —"मे' बूज़मुत बाल कृष्णस मुतलक बाकः लूकन निशु' ति नज़रि तल था'विथ छुनु' अज़ ति संसारस मज़ ति युथ कांह प्वरुशा लबनु' यिवान ये'म्य् ज़न वेद वेदांगन हुंदिस ज़ाननस मंज़ तु' बलवीरी मंज़ अ'मिस सा'त्य् मुकाबलु' करनुक खयाल ति आसि को'रमुता सारिनु'य महाबूतन हु'ज़ पा'दा'यिश तु' प्रलयुक आदार छु बगवान कृष्णु'य। सारिय ज़गतुक छु युहय अ'श्रय। प्रकृती तु' पुरुश दो'नवय छु युहो'य। व्यखु'त तु' अव्यखुत (ज़ा'हिर तु' बा'तिन) छु बगवान् कृष्णु'य। सिरिथि च'न्दरस तु' अतराफ व जा'निव छु से'रुय श्री कृष्ण। लिहाज़ा पूज़ा ति पज़ि अमिसु'य।

पांडवन हुंदि तरफु' ये'लि श्री कृष्ण सलहुक दस्तावेज ह्यथ कोरवन निश हस्तिनापुर वोत तमि विज़ि को'र दुर्योधनन शकुनी, दुशासन तु' करनु' सुंदि मशवरु' सा'त्य् अदलस बदल। ब'रिथ सबायि मंज़ वो'थ दुर्योधन क्रूदु'

सान थो'द तु' द्राव पननिस महलखानस कुन येति पनन्यन हवार्यन सू'त्य् श्री कृष्ण का'द करनुक फा'सलु' आव करनु'। बुज़र्ग कोरवन ये'लि अम्युक पय लो'ग धृतराष्ट्रन बुलोव दुर्योधन तु' वो'ननस चु' छुख पतु'न्यन यारन हंदिस मशवरस प्यठ पानु' बगवान विष्णुहस का'द करनि द्रामुत। यि छु सु ज़ि यन्दराजु' तु' सा'री दिवता ति हे'कानु' अमिस रुका'विथ। चा'न्य् दशा गछि तिछु'य य्वसु' द्वदु' शुरिस च'न्द्रम स्वछि मंज़ रटनु' विज़ि गछान छि। सा'री दिवता, मनुश, गन्दर्व तु असुर मीलिथ ति ह्यकन नु' श्री कृष्णस ब्रोंह् कनि ठ'हरिथा। सु केशव प्रजनोवथन नु चे'। हवा ह्यकोना स्वछि मंज़ र'टिथ। च'न्द्रम यिया अथस मंज़? ज़मीन ह्यकोना कछंस तल थूरि र'टिथ तु' बगवान रटहानु' चु'। अमि पतु' क'र्य विदुरजीयन ति दुर्योधनस फहमा'यिश करनु'च कूशिशा। मगर वेकार। अमि पतय को'र श्री कृष्णन व्यराट रूप यख्तियार, ये'मि स्वखु' दुर्योधन कर्ण तु' बाकी' हवा'र्य् मूरछा व्यथ पे'यि पथर। तु' बगवान द्राव सबायि मंज़ न्यबर। यिमन पतु' पतु' आ'स्य् भीष्म, कृप, विदुर धृतराष्ट्र, अश्वत्थामा, युयुत्सु विकर्ण अ दि सा'री महारथी, विदा करनु' खा'तरु' पकान।

यि सोरुय वननुक छु यि मकसद ज़ि श्री कृष्ण आ'स पनन्यन हमअसरन मंज़ ईश्वर यिवान माननु' तु' तिमन ति ओस पानस पननि अमि बजरुक तु' शकतीहुन्द ग्यान हा'सिल। बगवान ओस नु' महज़ थ'न्य चूरि निनु' तु' गा'व रछनु' खा'तरय योत मे'त्य लूकस मंज़ बो'थमुत। यथ मज़मूनस मंज़ छि तमाम उदाहरन महाभारतु' मन्ज़य आत ओमु'त्य दिनु'। अथ छि के'ह वजह। माहभारत छु सारिवु'य ग्रंथव मंज़ प्राचीन ग्रंथ यथ मंज़ ज़न असि बालकृष्णु' सु'दि ज़िन्दगी हुंद हाल छु मेलान। वेद व्यास जीयस प्यठ छु वुनिसताम सारिवु'य शास्त्रकारव का'फी विश्वास को'रमुत। अमिसु'य अकाम तु' निर्लूबरिवि द्रश्टी थवन वा'लिस महरे'शी वेद व्यास जीयस तु' तं'हज़न कथन ब्रोंह् कनि छु कलु' नो'रागवुन प्यवान।

स्वखसर छु यि ज़ि श्री कृष्ण बगवान मानन वाल्यन हुंद तेदाद ओस तिहदिस पननिस ज़मानस मंज़ हदु' खतु' ज्यादु तु' इतिहासन छै' यि कथ द'रश'वमु'च ज़ि निशका'मी महरे'शी तु' ग्या'नी तमि समयिक्य् आ'स्य् तिमन बगवान ज़ानान। ब्रोंह् कुन प'च यि कृष्णु' बख्ती हुं'ज़ुय परंपरा ज्यादय पहाम तु' अज़ छि कृष्णु' नावु'च बख्ती करन वाल्यन हुंद शुमार करुन मुशकिल। महाभारतस छु बगवान कृष्णु' सुंदि अवतार आसनुक मसलु निर्विवाद रयद को'रमुत।

श्री कृष्णु सुन्द कुटम्ब ओस स्यठाह बो'ड। मगर बगवानन द्युत नु' ज़ाँह् ति अन्यायस तु' अत्याचारस साथ। पानस ब्रोंह् कनि पनु'निस सा'रिसु'य कुटम्बस नाश करनुक साक्शी बनुन छनु' शुर्य कथा के'हति। यि हे'कि हे'पनु' बगवान क'रिथ अ'मी द्युत श्री कृष्णनस महरे'शी वेद व्यासन "प्रकृती हुंज़ि विगनि हुंद नचनावन वाल सूत्रदार" लकब तु' अमी सब' सबबु आ'स्य ब'ड्य् रे'श्य तु' ग्यानी श्री कृष्णस बगवान ज़ानान। (समाप्त)

KASHYAP SAMACHAR

Official organ of Kashmiri Pandit Sabha,

AMBPHALLA, JAMMU TAWI, J&K (INDIA) Ph. 47570

DECEMBER 1994

Vol. : V Nos. : 10, 11 & 12

Rates of advertisement

Matrimonial (40 words)	Rs.	60/-
Each extra word	Rs	2/-
Back cover	Rs.	1500/-
Inside cover	Rs.	1000/-
Full page	Rs.	600/-
Half page	Rs.	300/-
Quarter page	Rs.	150/-

Annual Subscription	Rs.	80/-
Price of this copy	Rs.	10/-
Annual Subscription outside India	US Dollars 30/-	

CONTENTS

MATA KHIRBHAWANI TRUST (REGD.)

WORKING OFFICE : AD-68 B, SHALIMAR BAGH,
DELHI-11C052-Phone : 7231743

KAR SEWA

Dear Brothers and Sisters,

We the Trustee's of the **Mata Khir Bhawani** Trust are pleased to inform you that **Mata Khir Bhawani** Temple is being constructed in Karhmir Enclave, Loni (Ghaziabad).

The land for the complex has been allotted by U.P.S.I.D.C. Ltd. The foundation stone was laid on 12th Oct. 1994 by Hon'ble Giani Zail Singh, Former President of India. Ths Trust is going ahead with construction of temple.

You will appreciate that no such project can be complete without proper Resources and funds and as such we request all the devotees of Mata to come forward and extend for completion of this Project. We also request you to convey to your friends and relatives above and help us with your valued contribution.

We are also releasing a Souvenier **"KHIR BHAWANI"** on 2nd April, 1995, the day fixed for the **"KHIR BHAWANI"** Temple,. Please send us the advertisement/articles/stories/poems etc. in Hindi/English for inclusion at our choice, in the above Souvenier.

Devotees are also requested to keep themselves available for **"KAR SEWA"** on the above mentioned date.

"MAY MATA KHIR BHAWANI BLESS US ALL"

Sd./P. N. DHAR
Managing Trustee.

THE RESPONSE TO THE ELECTORAL PROCESS

Elections may or may not be held in near future in Kashmir. The ground realities do not appear to be conducive to a free and fair poll in the valley and some parts of Jammu province, notably Doda district. Inspite of that, if the government goes ahead with the elections it has to ensure that over three lakh displaced people from the valley are not denied their right of franchise. It is a periodic refrain of some ministers in the central cabinet, including the Home Minister, that the "migrants" should go back to their homes. Whom are they fooling ? Do they not realise that they are not migrants but internally displaced people whose homes have been burnt, vandalised and occupied because they did not subscribe to an anti-national idealogy and were not provided security by the state. If they could not be provided security then how can they be provided it now. If the government had to put on a marathon effort of its forces, including that of the army, for ensuring security to a few thousand Amarnath pilgrims along a prescribed route of a mere 60 Kms., can if ensure security to three lakh people dispersed through hundreds of villages and towns across the valley. In this context only the Chief Election Commissioner, Shri T. N. Seshan has struck a positive note when he has unambignously asserted that no election process can be undertaken without ensuring the right of franchise of the displaced people.

The displaced community cannot afford to allow itself to be overtaken once again by circumstances and fall a prey to the political machinations of those who barely understand the ground realities. So it has to be ready with a plan of action in case the elections are held. It was, therefore, a positive development when all representatives of different organisations, displaced camps and intellectuals of the community assembled in the lawns of Kashmiri Pandit Sabha, Ambphalla on 16th October, 1994 for a brainstorming session on the response to the election process by the displaced people. After a threadbare discussion it was resolved unanimously that all the eligible persons of the internally displaced should register themselves as voters, wherever they are. It was also resolved that the internally displaced people should be provided "constituencies in exile" proportional to their population for the Assembly and Lok Sabha, from the quota of the Kashmir Province and allowed to contest and vote from wherever they are at

present. A representatation to this effect was also sent to the Chief Election Commissioner.

A free and fair election unfettered by the fear of the gun is the cornerstone ot democracy. Every member has a right to participate in the elections whether as a voter or a contestant Unless this is ensured, the election can be nothing more then an eyewash and an exercise in futility.

THE SYMBOL OM

The basic essence of our Hindu philosophy is magnifient OM. One should know OM to be god seated in the hearts of all. The OM (Aum) without measures and possessed of infinite dimension is the auspicious entity where all duality ceases. He by whom OM is known, is the real sage, and not so as any other man One should medtate on OM letter by letter viz a, u, m The first letter of aum, a leads To visva, letter U leads to taijasa and letter M leads to prajna. Visva experiences the external things and is seated in the eye, Taijasa experiences the internal things and is seated in mind Prajna is a mass of consciousness and is in the space within the heart. Manifesting word of god is Aum Aum is the most natural sound The first letter A is the root sound, produced without touching tongue, M represents the last sound of series produced by closed lips and U rolls from root to sounding board of mouth Thus Aum represents the whole phenomena of sound production

All prayers begin with OM. He who meditates on OM becomes identified with Virat. Om is Turiya that is, beyond all conventional dealings.

One should know OM quarter by quarter. Having known it, one shonld not think of any thing else than Aum.

Aum is without cause, without inside or outside and is undecaying Om is indeed the beginning, the middle, and the end of everything. Having known Aum in this way indeed one attains identity with the self.

Compiled by

Dr. C. L. KOUL

Ortho Surgeon

THE ETERNAL SOUND

— Janardhana

Ours is a faith and not a religion in the strict sense of the word. Our fundamental conviction is that faiths are many, the final goal is one, realisation of the Reality—the eternal Brahman. The basis or our faith are the Vedas-Shrutis, and Veda means to know, knowledge. Vedas are commented upon, explained and illustrated by Upanishads, Darshanas, Epics and Puranas The correct name of our faith is Vedic Dharma or Arya Dharma or Sanatan Dharma—Eternal Law. The Law and its source are identical and permeate the whole creation. The faith is eternal as well as universal, untouched by time Our faith does not have a person as its perceptor, like all other religions of the world. In this land Aryans originally settled in the plains of the river Indus, and the Iranians, our Aryan cousins, remaining behind, called us Indoos. The word gradually changed into Hindoos and has stuck to us as a popular name.

The fundamental principles of our faith are contained in the Shrimad Bhagwad Geeta—which has come to be the most popular and fundamental text book of our faith. It is no chance that the first word of this book is Dharma and the last word is Mam—combined fo form Dharmam—which means my Dharam, my faith. Thus Bhagwad Geeta is the crux of our faith. Sri Krishna himself declares in Geeta that He is AUM amongst words—thus this word is the essence of Geeta. It is the symbol of supreme Brahman, the divine ideal and the most powerful word and sound symbol for prayer, meditation and Japa The Sanskrit alphabets used for writing it are अ (A) and उ (U) combined to form ओ(O) and म (M). To convey the proper nuance of the sound of the word, the correct way to write it is AUM and not as OM.

An essential characteristic of Dharma is systematisation and Sanskrit alphabet is based on a system. Perhaps it is the only systematic alphabet in the world. The consonants are arranged in groups, depending upon the part of the vocal apparatus from where they proceed—starting with क guttarals (from the throat) and ending with libials प (from the lips)—thus proceeding from inwards to outwards. Then there are the vowels and combination of various alphabets, forming a total of 52, though some of them have become obsolete now. The sound of AUM starts from the throat, rolls forward in the mouth cavity and ends at the lips. The grandness of its composition cannot be put more appropriately than in the words of Swami Vivekananda :

"The first letter A is the root sound, the key, pronounced without touching any part of the tongue or the palate; M represents the last sound in the series, being produced by closed lips; and U rolls from the very root to the end of the sounding board of the month The AUM represents the whole phenomenon of sound production As such it must be the natural symbol, the matrix of all the various sounds It denotes the whole range and possibility of words that can be made " What grander conceptual sound could there be !

Sounds in general are of two kinds. Articulate sounds, or alphabetical sounds concerned with the head—that is they are for understanding by the intellect. One needs to learn the alphabet of a language to understand its articulate sounds. One cannot understand French without learning its alphabet. Intonational sounds are concerned with the heart—that is they are to be felt emotionally. They do not need any alphabet. They can be understood by everyone, even by babies and animals. These sounds include the sounds of laughter, weeping, acclaim, exclamation and music. The effects of these sounds are universal and often more effective than that of articulate sounds, AUM is both, articulate as well as inarticulate. Its chant produces harmony, peace and bliss The whole body vibrates with its music. It is the Cosmic music, "The music of Spheres" It is the Anahata Naada.

Man, by inherent nature is an idol worshipper. He needs a concrete symbol to represent the unknowable and unseeable The function of an idol is to lead us to the ideal, the Ultimate Reality, which is Brahman. All gross human equipment is inadequate to reach it. We cannot preceive Brahman with our sense organs, nor can we reach it emotionally directly with our minds, nor can we understand it intellectually. The Ideal is unknown to us. We need a known symbol to reach it, thus the need of idol as symbols. Idols can be gross, visible, concrete or subtle. Gross idols are stone images in temples, or pictures of gods as they are imagined to be, by men. Visible or felt symbols are fire, wind, sky, oceans, mountains or even animals. Subtle symbols are the Yantras, the Swastika and some sounds. Sound symbols are the most subtle. We perceive symbols with the help of our various sense organs, but sound symbols we perceive with only one sense organ, that is our ears That is why sound symbols are the most subtle idols. In prayer or meditation we repeat the sound symbols articulately or inarticulately. Of all the sound symbols AUM is the most natural, the most powerful and best possible idol.

Human beings experience three states of consiousness. These are, the waking state (Jagrat) the dream state

(Swapna) and dreamles deep sleep state (Sushupt). What pervades all the three states is pure consciousness and AUM represents that pure consciousness, witnessing the other three states. According to Vedanta A stands for the solid seeming observable and wakeful state of the material world, U stands for dream view of the world and M represents the unknown deep sleep state. AUM helps you reach Turiya, the fourth state, which is the witness of all the three states and Parambhahm

AUM is nature's word mantra. It is a pure word by itself, it does not belong to Sanskrit alone, it does not belong to any one religion. It is a universal word. It is used in different forms and ways in different languages and religions. In English we say God is Omniscient, Omnipotent Omnipresent—all words starting with Om. Our prayers start with AUM and Christians and Muslims end their prayers with Amen and Aameen, both sounds akin to the same sound Aryans recognised the universality and effectiveness of this sound and made full use of it.

AUM is called Pranava in Sanskrit—that by which divine ideal is effectively praised. Pranava has been highly extolled in the Vedas, Upanishads, Bhagwad Geeta and other scriptures. Atharva Veda states that man can overcome his beastly nature by having recourse to the repitition of AUM. Yajur Veda exhorts us to try to realise Brahman by repeating and remembering AUM. Katha and Manduka Upanishads declare that AUM is Brahman itself and the unity of Atman and Paramatman can be realised by its repitition in Japa. Patanjali in an aphorism in Yoga Sutra says: "The word which expresses him is AUM The word must be repeated with meditation upon its meaning. Hence comes knowledge of the Purusha and destruction of obstacles to that knowledge". In Madukiya Upanished it is stated: "Within the lotus of the heart dwells HE, where the nerves meet like the spokes of a wheel. Meditate upon HIM as AUM and you may easily cross the ocean of darkness". Thus we start all prayers all religious rites and all important functions with the repetition of AUM. Our scriptures relate the Brahma the first born of Gods, was once meditating on his creator when there was manifested within the shrine of his heart, the eternal word AUM-the seed of all knowledge and all thought.

The basic of Sanatan Dharma is 'Sarva Lokey ek Natham' the supreme Reality is one, but its manifestations are many As Creator He is Brahma and A represents Him, as Preserver He is Vishnu and U represents Him, as Destroyer He is Rudra and M represents Him. So AUM is the symbol of the three states of Reality. AUM also represents the three

Gunas, Sattva, Rajas and Tamas, of which the whole Cosmos is composed It also represents' the three margs or Paths, Karama, Bhakti and Jnan. The crescent moon represents the goal of spritual endeavour. We start our prayers or any sacred chant by invoking Shri Ganesha Deva and the elephant head represents wisdom and its trunk represents AUM. There is a sect in our Dharma called Natha - Yogins who specialise in the worship of AUM along with that of Shiva. For them "AUM is the First sound, the most elementary sound, the most spontaneous self expression of Energy and power in audible form". For them AUM is the name of the Supreme. It is a continuous' unbroken sound.

The symbolism, design and significance of AUM is grand. It is a power house of primeval Energy of Brahman. It is a bow of tremendous Potential Energy, of the power of coiled spring, by proper and constant use of which Kinetic Energy can be released so that the Arrow of Atmsn sails towards the Paramatman and merges with it. This is the ultimate goal of all Bhakti, Shakti, Jnana, Sadhana and Tapas. Any Jiva who strives for it through constant dedication and meditation will surely attain the goal of Realisation of the Ultimate Reality.

AUM TAT SAT

Remembering Bhagawan Ji

--Prof. A. N. Dhar

Bhagawan Gopi Nath Ji attained Mahasamadhi in 1968. Since then his renown as an eminent saint has spread far and wide. The number of his devotees and followers has swelled considerably during the past 2-3 decades. In consequence, Bhagawan Gopi Nath Ji centres have sprung up at several places in India in addition to the main centre at Srinagar; one centre has been established in N.S.W., Australia. The present Ashram at Udaiwala, Jammu, that came up in the wake of the outbreak of militancy in Kashmir, has turned in a busy spiritual centre where regular prayer meetings devoted to Bhagawan Ji are held on all week-days. Besides, **Yajnyas** are performed periodically at this centre and the birthday of Bhagawan Ji is celebrated with great fervour and devotion annually here. In fact, it is noteworthy that all the centres are managed and run efficiently, thanks to the orderly manner in which a disciplined and dedicated band of Bhagawan Ji's followers is seen to handle congregations and conduct proceedings at each centre.

I remember having seen the Bhagawan on some festive occasions at Khir Bhavani and also several times at his Chandapora residence in Srinagar in the fifties (when I was a young man in my twenties). When-even I observed this great saint, what impressed me deeply about him was total absorption in divine contemplation—that a true seeker could immediately perceive. One had to lend one's ears keenly to the words he sometimes mumbled to get at what they actually conveyed. Once, in my very presence, Bhagawanji almost whispered some meaningful words into the ears of my friend, Sh. Triloki Nath Dhar, and then made an offering into the **dhooni** that was there in front of him. As I gathered from my friend later, Bhagawan Ji had spoken of his own exalted state of consciousness, what in mystical parlance could be described as Unitive Experience. I, myself, had an 'encounter' of a different sort with Bhagawan Ji, which I still shudder to recall (though the experience, in effect, turned out to be auspicious for me). I saw the saint last at his Chandapora residence in 1961 purposefully to seek his blessings. Something about me was perhaps not liked by Bhagawan Ji. This became evident when he spoke some harsh words to me, making me leave the room in an agitated state of mind. Within a couple of days of this seemingly 'unpleasant' encounter, I got the job I had applied for—a

Lecturership in English, which I held at the start of my teaching career. Obviously, the Bhagwan's 'anger' proved to be a blessing for me !

In attempting the present article on Bhagawan Gopi Nath Ji, I am acutely conscious of two handicaps— my first handicap is that I have not had the advantage of knowing this saint closely as a disciple nor as a devotee who paid regular visits to his residence. The other handicap is that my own knowledge of authentic facts relating to Bhagawan Ji's life and teaching is scanty, far less than what one can glean from the two sequential studies published by Bhagawan Gopinath Ji Trust—the biographical study by the late Sh. S. N. Fotedar and the volume bearing the sub-title 'The Saint of All Times' by the late Professor K. N. Dhar. Shri Fotedar's work is a well-documented study, offering a lucid account of the life and teachings of Bhagawan Ji. It is replete with authentic facts, in terms of dates and events, concerning the life of the saint. Analytical and critical in his approach (aiming at objectivity in spite of his devotional fervour), the author has arrived at sound conclusions regarding the spiritual attainments and eminence of Bhagawan Ji. Professor K. N. Dhar's volume is a useful sequel to Shri Fotedar's biographical study. It sheds further light on the important observations and statements made in the earlier work. The author has attempted to provide illustrative support from relevant scriptures (bearing on Vedanta and Shaivism) to the findings and conclusions of Shri Fotedar. The concluding section of the book, titled 'Exchange of Notes', is revealing. On going through the letters exchanged, among others, mostly between Mr. Philip Simpfendorfer and Shri Pran Nath Koul, Secretary Bhagawan Ji Trust, the reader realizes how 'Bhagawan consciousness' has grown and spread beyond India, 'touching' and influencing devotees in far off places like Australia, where Bhagawan Ji's Australian devotees have established the centre mentioned earlier.

Having touched briefly on the two studies brought out by Bhagawan Gopinath Ji Trust, I should like to elaborate a few points that I gathered from Shri Fotedar's work. I shall deal with them one by one.

i) The question of who actually was Bhagawan Ji's Guru has been discussed at some length by Shri Fotedar. After thorough investigations-all controversies settled-he has come to the conclusion that Swami Zanakak Tupchi was his Guru. However, the author mentions Bhagawan Ji himself as having conveyed, in response to a disciple's query, that he considered the **Gita** as his Guru. At the same time, we know on authority that Bhagawan Ji was fond of the **Guru Gita.** Understandably, he prized it because his Guru, Swami Zanakak Tupchl, had prescribed its study for his disciples. And this work

indisputably attaches utmost importance to the Guru (as a person). The only conclusion we can draw from this apparent divergence is that while the Guru's grace is indispensble, the seeker has to assimilate his Guru's teaching through self-effort. The Guru's **anugraha** and the seeker's **Purushartha** are complementary in character.

ii) Bhagawanji led a celibate life; yet he continued to live in **grahasta** and performed **agnihotra** as a ritual in earnest throughout his life. He never donned the yellow robe and did not preach or practise vegetarianism. Nor did he preach any orthodox doctrine but spent all his time in **sadhana.** All this could lead one to the conclusion that Bhagawan Ji was in line with the tradition of Kashmiri saints who were at once **Shaktas** and **Saivites,** who wouldn't make a distinction between 'Siva' and 'Kesava', who never thought high of external **sanyasa** but emphasized inward purity and discipline.

iii) Bhagawan Ji was a great **Siddha** and used his spiritual powers for the welfare of mankind. He performed miracles to alleviate the suffering of **bhaktas** and to he those who were in distress. As a **tattava jnani;** the Bhagawan emphasized self-analysis and introspection. Ample evidence is available to suggest that he continues to give spiritual seekers and events as a Jagat Guru.

iv) He was an institution in himself, an accomplished Master who could initiate the seeker through a glance, a gesture or a puff from his **chellum.** As as spiritual genius, he evolved his own techniques to awaken 'Bhagawan Consciousness''.

v) Bhagawan Ji was accessible to all and gave liberally of his spiritual bounty, taking of course, into account the receptive capacity of each seeker. His impact on a large number of spiritual seekers has been phenomenal, explaining his pervasive influence in this country any abroad.

May Bhagawan Ji's grace descend on all of us in this hour of crisis and deliver us safe across the perilous ocean of **samsara** !

(Courtesy Bhagawan Gopi Nath Ji Trust)

BOUQUETS AND BRICKBATS

—M. L. Raina

With the political ethics in our country having degenerated into political convenience and expediency, politicians of various hues and shades of opinion are engaged in wrangles, in a bid to outmanoeuvre one another for establishing supremacy in the alluring corridors of power, unmindful of the damage caused to the national interests in the process. Their obsesssion with pelf and power has cast a pall of gloom on the national scene.

The greatest threat to our national integration and solidarity is unmistakably, posed by the on-going militancy in Kashmir which is inspired and supported by a neighbouring country that is hell-bent on bringing our national edifice crashing down. The lowgrade insurgency which was, unfortunately, taken casually in the beginning has, over the years, assumed alarming proportions. The ill-conceived policy of drift, born of utter lack of imagination and proper perception of the ground realities in the strifetorn, valley, has been responsible for chaotic conditions obtaining there presently. The central government bungled at every step from the very beginning; some leaders of the opposition behaved in an unpatriotic and irresponsible manner by making statements which had a demoralising influence on the security forces and sent, at the same time, wrong signals to the insurgents. These politicians, being out of power, began to fish in the troubled waters by playing to the gallery. Those who were at the helm of affairs considered clinging to the seats of power more important than safeguarding national interests and thus succumbed to the despicable pressure tactics of individuals and groups to adopt a soft line in dealing with the terrorists. This type of political insincerity provided grist to the mill of the militants who went on the rampage with redoubled virulence.

Where do we stand now? What have been our achievements in crushing militancy? Things are going from bad to worse, with the militants having succeeded in striking terror in parts of the Jammu region also. The powers that be are paying through the nose for their initial blunders in respect of their line of action to curb insurgency. They seem to be lost in the self made eddies of helplessness and confusion. The experiments they have been marking to resolve the seemingly intractable imbroglio haveproved counterproductive.

Political standards and priorities have turned topsy tusvy, with our leaders having lost their sense of right and wrong. Seces-

sion is 'rewarded' and patriotism. 'punished'. Insurgents are given a special treatment, whereas patriots are treated shabbily. Many are the devices employed to pamper the antinational elements. What can be more humiliating and bizarre, for instance, than a couple of 'great' intellectuals of this 'great' country (presumably at the instance of the Central Government) to stoop so low as to offer juice to hunger—strikers—who have many murders on their heads - to end their fast, when the natural and just course would have been to leave them to stew in their own juice. The employment of such deplorable means to win over the people, who have held the whole country to ransom, betrays political incompetence and bankruptcy.

Whether there is method in this political madness or otherwise, we have no means of knowing. What we know with absolute certainty is that we, the displaced Kashmiri Pandits, hounded out of our place of birth by religious bigots, at gun point, are treated as strangers in our own home by our own government. When we were forced to run for life, we expected sympathy and succour from the Central Government, as a matter of right. But alas! the indifference and callousness exhibited by the Government gave us a feeling of having fallen off the "frying pan into the fire". Instead of creating conditions for our leading a reasonably dignified life as patriotic citizens, indignities were heaped on us in a variety of ways. We were driven to the necessity of begging for food and shelter. Lots of hurdles were created in our way to procure the bare necessities of life. The stark humiliation our community was subjected to is a matter of common knowledge. Disease and death stared us in the face. The subhuman conditions we were obliged to live in were the 'reward' for our nationalism and patriotic fervour.

All these years we have been clamouring for our rehabilitation and redressal of our grievances, especially those of our youth whose fundamental rights in regard to their unhindered educatlon, professional pursuits, and job opportunities have been snatched away. As things are moving on, we have apprehensions that our community may disintegrate and become extinct ultimately. Enormous amounts of money are pumped into the valley in an attempt to wean away the general public from the influence of the militants. Big chunks of this money find their way into the coffers of the secessionists. We don't grudge the financial assistance to the victims of terrorism in the valley, although we know where their sympathies lie. But what cuts us to the quick is the fact that our appeals for help are brazenly brushed aside. When issue pertaining to the rehabilitation of K Ps are raised at different for a, the authorities look the other way, close their eyes and plug their ears, but

when it comes to helping the antinational populace of the valley, they are all eyes and all ears! In every sphere of activity, K. Ps are completly ignored as if they are not a part of this nation which is supposed to be "Mahan"! What is distressingly mystitying is that "bouquets" are set apart for the foes of the nation whereas "brickbats" fall to the lot of the people steeped in patriotic passion. What a morbid reversal of values! God alone can save the people of this 'great' nation from this perverted type of political dispensation in which "toul is fair and fair is foul". All that we can do is to lament with the bard"—"MANJDHAR MAIN NAYA DOLE, OSE MANJI PAR LAGAYE; MANJI JO NAO DUBOYE OSE KAON BACHAYE?"

(If the boat is caught up in the vortex of waves, the boat man will extricate it; but if the boatman himself chooses to sink the boat, who ean save it?")

KASHMIRI PANDIT SABHA

Ambphalla, Jammu.

The following donations have been received by the K. P. Sabha in October and November, 1994, which are being gratefully acknowledged. **We request the members of the Baradari to donate liberally for relief, marriage of the girls, medical assistance, education of children etc.**

1.	Shri A. K. Kaul	Rs. 300/-
2.	Khir Bhawani (Ashtami Maha Raginia)	Rs. 300/-
3.	Hari Krishan Ashram	Rs. 100/-
4.	Sh. Jagdish Chander, Shivpuri	Rs. 1000/-
5.	Sh. Moti Lal Khan	Rs. 200/-
6.	Sh. Badri Nath Kaul	Rs. 90/-
7.	Sh. P. N. Dhar	Rs. 100/-
8.	Sh. P. Ganjoo	Rs. 300/-
9.	Shrimati Mata Ji (Shaktinagar)	Rs. 50/-

An amount of Rs. 5301 has been provided as relief to various members of the Baradari for different purposes during this period. To maintain the dignity of the recepients no names are being published.

WHAT SHOULD BE THE K. P. RESPONSE TO THE ELECTION PROCESS

—Dr. K. L. Chowdhury

Jammu air is heavily laden with election talk. There is one question on everybody's lips. Will the election really come off and when ? The Central Govt. is categorical in its committment to hold elections. That it is serious is evidenced by the fact that a new delimitation commission has been set up and moves are already afoot to update the electoral rolls. No doubt a spanner has been thrown in this process by the resignation of a member of the commission and the refusal of revenue officials in the valley to help in the revision of electoral rolls, but it is not going to dampen the spirits of the Govt. which is finding replacements and alternatives.

The Kashmiri Pandits in exile have been directed to examine the draft rolls of the constituencies in which they were already resident and which are now published in the offices of the Deputy Commissioners Jammu, Kathua and Udhampur, Tees Hazari (Delhi) and Chandigarh.

How does the Govt. at the centre and the Election Commission envisage the participation in elections of a whole community which has been forced into exodus and is living in exile for the last five years ? What is going to be the response of this community to the elections ? These are two vital questions that need to be pondered over.

Let us examine the first question first. From the course that militancy has taken in Kashmir over the last five years and from the posturings and statements of various politicians, bureaucrats and ministers of the central Govt. who have been messing with Kashmir, certain conclusions are inescapable. They can be broadly summarised as under :

(i) Notwithstanding the fact that Prime Minister Rao has snatched Kashmir affairs from the clutches of his two brawling colleagues in the Home Ministry there is so far no evidence of a coherent policy nor a co: ce ted effort to tackle the Kashmir prob'em in its totality.

(ii) The situation in the valley continues to defy solutlon since the gun is still supreme and has supplanted all democratic, political and judicial institutions.

(iii) Inspite of a has-trick of failure by Pakistan to table a resolution in the United Nations against India, it has kept the whole nation on tenter-hooks and the Govt. of India is under increasing pressure from the international community to enforce human rights and re-establish democratic rule in the state of Jammu and Kashmir.

(iv) The central Govt. is toying with the idea of a Punjab-like experiment in the state by holding elections.

(v) Since most of the political and militant outfits in the valley have vehemently opposed elections, including the moderates like Shabir Shah and Yasin Malik, a miserable voter turnout is the best that can be expected.

(vi) Therefore the Govt. has started concentrating its efforts on those segments of the population which it perceives to be favourably inclined towards elections.

(vii) The displaced Kashmiri Pandits living in exile are one community which has caught their attention and, inspite of differing perception of the so called Kashmir specialists at the centre about Kashmir, they are unanimous now in persuading and pressurising them to return to the valley and to participate in the elections, this without addressing themselves to the genesis of their exodus or their present abyssmal conditions in exile or to the measures to restore them to their rightful status in the valley.

(viii) Therefore after a gap of four years some ministers and politicians have started their pilgrimage to the refugee camps promising them token offerings to relieve some of their impending situations and roping in the camp commanders in the election process and thus trying to win them over with the aim of luring the exiled community to the valley and/or to the ballot box.

(ix) Now the search is on to gain the confidence and favour of those of K. P. organizations and leaders who have always been at "His Majesty's Service" to sacrifice the interests of the community for petty personal gains. Simultaneously forces have been set to work and create wedges in the attempted unity moves of K. P.s so that a large percentage of them will be made to vote in the event of elections taking place without first finding solutions to their immediate and long term problems.

(x) K P participation is being viewed not only as a symbolic factor since the presence of more than 3 lakh refugees is a blot on the face of the mighty

Indian democracy, but will also ensure some voter turnout to give the elections a semblance of credibility.

So far as Election Commission is concerned, Mr. Seshan is, no doubt, on record that there will be no elections in Jammu and Kashmir without the participation of "migrants", and the notification by the Chief Electoral Officer directing the "migrants" to examine their draft rolls is a clear signal that the "migrants" are being deemed as ordinary residents of the constituencies from where they have been hounded out by the militants, and since there is no question of their return to these constituencies in the foreseeable future, the Election Commission seems inclined to use the provision of the postal ballot for this large chunk of population, certainly the most unprecedented form of voting in a democracy.

In short the answer to the first question is that the Govt. at the centre is not bothered with the outcome of elections so far as Kashmiri Pandit is concerned except to use him as a pawn ready to be sacrificed in the dirty chess game of politics and the Election Commission will oversee this brutal sacrifice through its good offices, if the K.P.s are forced to participate in the elections under the present dispensation.

This brings us to the second question namely, the K. P. response. After an initial phase of indifference to the announcement by the centre of its intention to hold elections in the state, there has been brisk activity in the K.P. circles in Jammu. For a change the lead was given by an apolitical group of intellectuals who on finding the traditional leadership in a state of apathy and confusion seized the initiative and got together to take the stock. The problem was discussed threadbare during several sessions spread over a week. The Kashmiri Pandit Sabha, Jammu, took the onerous task of involving the organizational and party heads of the K. P. community for a discussion in order to build a collective response on the one point agenda of elections. Accordingly a meeting was organized in the lawns of Kashmiri Pandit Sabha at Ambphala which lasted six hours, and was attended by the representatives of all organizations, the camp commanders and other citizens. A healthy debate was generated and more than two dozen speakers aired their views culminating in a near unanimous resolution seeking constituencies in exile as a pre condition to the K. P. participation in elections.

The logic of seeking constituencies in exile seemed simple and straight-forward. The K. P. community today is stationed in refugee camps or rented accomodation in Jammu or other towns, far away from their native constituencies to which they cannot return just to cast votes. Their participation in election is not only meaningless but foolish too, if they have to vote for the same

people who hounded them out of their native land. They themselves cannot seek candidature of the legislature or Parliament because that will require the support of the electorate, which is inaccessible to them so long as violence and terror prevails in the valley. The Election Commissioner will certainly fulfil his promise of making the K. P.s participation possible through the postal ballot. It finally boils down to the Kashmiri Pandit not only legitimizing the election fraud on himself but also lending grist to the same mill in which he was ground through the last four decades.

The exiled K. P.s are not migrants. They are internally displaced people, refugees in their own country. A mass postal ballot cannot be envisaged for them, there being no provision for such an extraordinary situation where more than three lakh people have to exercise franchise away from their constituencies and in exile. Yet the right to franchise cannot be denied to them. Since their participation in elections under the present dispensation is out of question, alternatives have to be found. It the Election Commission and the Govt. of India are sincere in their pronouncements, the exiled K.P.s should be given a chance to elect their genuine representatives by granting them constituencies in exile, proportionate to their numbers as registered "migrants".

What is the advantage of having a few constituencies in exile, many ask ? Does it solve the problems of the community ? Is there not a danger of lending legitimacy to all the new constitutional changes that may be effected in the J&K Constiution, once a new Govt. is installed, for whatever be the new face of state legislature. it can be expected to be only more rabidly communal than ever betore and a few K.P. representatives can hardly change the equation ? Does it guarantee the K.P.s safe passage in the valley and the freedom of thought and speech and the equality of opportunity ? Does it guarantee them the restoration of their estates and houses which have been destroyed, the return of their business establishments and jobs which have been taken over ? Does it guarantee them against a non-repetition of the genocide to which they have been subjected to in the past ? No frankly there can be no guarantees just because a community sends a handful of its elected representatives to the state legislature.

But non participation in elections will not guarantee anything either. In that event the community will be seen as obstructionist and stumbling block to a political process and as protagonists of the militant organizations who have come out for a boycott. Not that it bothers them under the circumstances when they have lost everything. But in the event of the elections really coming off in a Punjab-like experiment, what is the guarantee that a large chunk of the K.P.

refugees will not be coaxed or coerced to vote. The people living under the most pathetic conditions in the tents are waiting for a nod, even a deceitful signal to return to their homes and hearths and it is they who will bell the cat, leaving the organizations and leaders high and dry.

An opportunity has offered itself for the Kashmiri Pandits to bargain for something at this crucial juncture. They should not let it evaporate in the air. The demand for constituencies in exile is not against other demands. In fact it could be the beginning. A representation in the State Legislature and the Parliament gives them a launching pad for their struggle for a solution to they genuine grievances which should be redressed before they agree to return to their homes and hearths in the valley.

It is high time that all Kashmiri Pandit organizations and groups converge on this issue. While they are welcome to preserve their group identities and guard them ever jealously, they will have to strive for and seek a common Kashmiri Pandit identity and bridge the yawning gulf in their perceptions.

*

THE MIGRANT VOTE

The Election Commission's announcement on Monday, laying down procedures for the enumeration of Kashmiri migrants in the current revision of the electoral rolls, marks a unique feature in the process of restoration of democracy and the political process in Jammu and Kashmir. The announcement follows Chief Election Commissioner T. N. Seshan's earlier declaration that he would see to it that the Kashmiri migrants, who had been forced to leave their homes following the outbreak of militancy in the Valley, were able to participate in the elections in the State as and when these were held. A significant aspect of the decision is that while the law provided for postal voting by such categories as members of the defence forces or government servants posted abroad, it would be a new and unpreceedented situation when the migrants would be exercising their franchise from refugee camps and other places outside their original area of domicile. The migrant community, constituted mostly by minority Kashmiri Pandits but including some Muslims as well, would fall into two categories: Those who have migrated within the State; and, those who have moved to other States or Union Territories.

It is not totally unlikely that by the time the elections in Kashmir are finally held, the situation on the ground might have improved sufficiently to encourage the migrants to return to their homes. That would automatically endorse the wisdom of their inclusion in the revised rolls The recent statements by some Kashmir leaders such as Mr Javed Mir and Mr Shabir Ahmed Shah admitting that the migrants were an essential element in the Valley's cultural mosaic have been particularly encouraging. But there still are sufficient groups and leaders even within the Hurriyat conglomerate who continue to frown upon such suggestions. And, it is quite understandable if the migrants would want to be doubly sure of their welcome on their journey back home lest they are caught in the crossfire between the moderates and the fundamentalists.

But even if the situation on the ground does not change as fast as one hopes it would, there still is reason to commend the move made by the Election Commission. For putting a section of the local population out of the electoral picture simply because they were forced out of their homes by militants would amount to conceding to the terrorists the power to choose who should be allowed to participate in the voting process and who should be kept out. There is special meaning and importance of the Kashmir elections, when then are held. They will be nothing short of a referendum. In all likelihood, it would be on the basis of the

outcome of these elections that the future character and content of Kashmir's relations with the Union and the relative role of the various ethnic and cultural entities within the State will be determined. It is therefore for the Centre to take a cue from the Election Commission's initiative and back it up even with the necessary amendments in the law.

(Courtesy :
"The Hindustan Times"
Editorial, Nov. 16, 1994)

Editor's Mail

Sir,

I seem to have no wards to express the intensity of joy I felt on seeing the great stride your esteen ed journal "Kashyap Samachar" has taken in its Janamashtavmi number and to know that you propose to issue its second edition in October, 94. I am sure with the cream of migrant and resident K P. scribes, intellectuals and administrators of Jammu, the journal is bound to catch up with "Koshur Samachar" and not only parallel it but also speed on from progress to progres and to focus on to common aim.

With all the good wishes and greetings.

P. N. Razdan
(Mahanori)
Shiv Drishti, Lane 2,
Shyam Vihar
Agriculture Road,
Gole Pullee, Talab
Tillo, Jammu-180C02

Dispatch From Kashyap Samachar Correspondant

R Hangloo

It proved a tale of despair for a Kashmari Pandit displaced lady on the eve of Janam Ashtami, who was dragged out of her quarter at Chhani Police Housing Colony. Her appearance wears the proof of her mental torture and agony suffered at the hands of erring officials of police estates Department.

On the fateful morning of August 29 when the atmosphere in the entire housing colony was gaining momentum of "JAI GOPALA" celebrations. A widow Chuni Raina (60) was busy in the kitchen when her door was knocked. She asked her son to open it, narrates Chuni Devi. An official in civil dress assisted by police men and women without asking anything slapped the tender face of her son & dragged out both mother & son to the main road from the 2nd storey of the incomplete building and ordered their associates to throw out their belongings. Withinseconds their belongings were scattered on the ground along with the photograph of her late husband. Some youths who were celebrating the occasion nearby were witness to it.

Meanwhile attention of the Janam Ashtami processionists passing through the colony was diverted towards her as she cried, they requested the police officer on humanitarian grounds not to harass the poor lady. The police turned deraf ear, and instead stormed Janam Ashtami procession, explains the President of Migrant Hindu Forum, as "we could not stop our religious sentiments for this sacrlegious act." Mean while some police personnel managed to whisk Chuni Devi and her son in the police bus after damaging the Jhanki of Lord Krishana, which further aggravated the situation.

Agitated youth whose religious sentiments were hurt resorted to Dharna on Cailway track joined by the other members of the community demanding action against involved officials

It was a peaceful protest as S.H.O. was witness to it, says Prithivi Nath of Chhani it turned violent later when S. P. Crimes and Railways reached and caught hold of a youth by neck for shouting Bharat Mata ki jai. The S. P,s inhuman attitude worsened the situation further and the mob gheraoed him resulting in injury to the S.P, who later ordered lathicharge. With the intervention of B.J.P. National Executive member Vaid Vaishno Dutt the mob dispersed and situation was defused.

In the meantime Chuni Raina was

excessively beaten thrice enroute to police station, evident from the scars on her body; her clothes were torn and fielthy langnage was used, says Chuni Devi.

In the evening after the intervention of community leaders she was set frce with her son, who for weeks remained in mental agony as his mother was mercilessly beaten before him.

However, the police claims that it is only a manipulation to malign the force meant for giving protection for the celebration on a religious oceasion.

A RESPONSE

(Reproduced below is a letter purported to have been written by one Khaliq Wani, Mohalla Ustad, Jammu on 8th August, 1994, addressed to the President, K.P. Sabha—Editor)

My dear Khosa Sahib,

I have gone through a news item in "Kashmir Times" expressing concern over banon "Yatra", wherein the Kashmiri Pandit Sabha has cautioned the govt. to get all the houses of the displaced Kashmiri Hindu community forcibly occupied by the Muslims on behest of the militants in Jawahar Nagar, Balgarden and Karan Nagar, vacated immediately. I would like you to please make amendments in your statement and instead of Muslims only militants should be used. It is only militants from downtown border areas of Kupwara and some militant families from across the border who have forcibly occupied KP houses. A common man, a Muslim wants peace and situation to normalise but the following vested interested groups shall not allow the situation to normalise :-

(1) Sales Tax and Income Tax evaders :- Since 1990, nobody from the valley has paid any Tax and in some cases it amounts to millions of rupees. The arears of sales tax at Lakhanpur have not been cleared by the valley traders. The number of such Tax evaders is in thousands and they fear that once mormalcy is restored, they shall be forced to pay the arears. These institutions, industries / traders / pay huge amounts to sustain militancy for their own sake.

(2) No electricity dues have been paid since 1990 by industries/domestic consumers. Everybody in the valley would like Rs. 100/- on the average to be saved per month by continued militancy.

(3) Thousands of houses of Kashmiri Hindus have been ransacked and now occupied by militants or their harbourers or close relations. Even militants from across the border with their families are living in these houses. These houses have not been occupied by the Muslim neighbourers rather they envy their occuption by downtown militants or militants from border of Kupwara, across the border or undesired elements. The militants organisations have planted these militants in the areas where secular Mohammadadans are living and these illegal occupants come on the streets on the slightest calls of the hartal/protest given by any militant organisation. The local people of these areas want peace but it shall be there only once occupants (forcible occupants of Hindu Houses) are arrested, challaned, and paraded before Human rights organisations.

on whose behest they have plundered and ransacked the Hindu houses and subsequently forcibly occupied them. I would suggest a delegation of Hindu displaced persons to accompany the Human rights organisation groups to valley to pin-point the devastation militants have brought to the valley. All Hindu families have already submitted property statement to the govt. (including moveable property) and most of their property was insured in 1990, therefore the forcible occupants could be challenged for tresspass, breaking of locks, loot/plunder of property, damage to the house and property and forcible occupation of the houses. The govt. should immediately prepare a list of such unauthorised forcible occupants and take strong administrative and legal measures. It will be revealed that all these unauthorised persons / families are active militants only and not the Muslim neighbourers or an ordinary Muslim citizen.

(4) Gardens and agriculture lands in most cases have been forcibly taken possession of by militant organisations.

(5) About ten thousand govt. jobs of Kashmiri Hindus working in Banks and govt. of India organisations have been handed over to Muslim employees. They should be immediately handed over back to Hindus to restore secular image and confidance of nation in secular polity of Indian Union.

Here govt. is responsible solely for this Act. Even some Hindu officers/official working in Kashmir at present would like situation to be abnormal to reap the benefit/share from govt. funds/loot of public money.

The above five categories of beneficiaries of the militancy would like the abnormal condition and militancy to continue and unless law & order machinery is enforced to steamlime the situation and financial discipline maintaing in govt. offices and taxes realised these undue beneficiaries and criminals would not allow situation to improve as it goes against their vested interests.

Rest all are pretexts. I am hundred percent sure that militancy cannot sustain if you enforce law & order. Militants will lose interest in militancy as no benefit shall accrue to them and common man who is not interested in abnormal condition shall be heard and prevail on militants ; otherwise by delaying it we are only increasing the number of militants indicated in five paras above with passage of every day are creating more vested interests.

Govt./militants, not Muslims to be blamed for illegal occupancy.

BARADARI NEWS

K. S. News Correspondant

SYMPOSIUM ON "RESPONSE OF KPs TO THE ELECTION PROCESS"

A symposium on the response of KPs to the election process was held in the lawns of K. P. Sabha at Ambphalla on 16th October, 1994. Representatives from all organizations of KPs, Presidents and delegates of Mohalla Committees, camp commanders and a large number of intellectuals of the community participated. The symposium was presided over by Shri O. N. Kaul. The President of the Sabha, Shri T. N. Khosa welcomed the participants and introduced the subject. The General Secretary, Prof. S. K. Shah enumerated the role of the K. P. Sabha in bringing the organizations and intellectuals together for a brainstorming session on the subject, in order to arrive at a concensus. In all, over 25 delegates spoke, which included Shri A. N. Vaishnavi, Gen. B. N. Dhar, Dr. K. L. Choudhury, Shri T. N. Shalla, Prof. A. N. Sadhu, Prof. Koshalya Wali, Prof. J. N. Durani, Shri M. L. Aima, Shri C. L. Chrungu and others. After a lively and threadbare discussion, lasting for well over five hours, two resolutions were unanimously passed. It was resolved that all eligible KPs should get themselves registered as voters. It was further resolved that in the event of an election in the present circumstances, the internally displaced people should be provided "constituencies in exiee" from the quota of Kashmir valley, proportionate to their number, and should be allowed to participate in elections, wherever they are. A committee was formed which drafted a representation to the Chief Election Commissioner, on behalf of the displaced people, and the same was sent to him stating the demands in line with the resolutions passed.

MASS YAGEOPAVIT FOR DISPLACED PEOPLE

A mass Yageopavit was organized for young boys from the displaced community by Swami Natraj Nanda Saraswati, at Barnai on 7th December, 1994. The ceremony was held for 20 boys. A large number of the members of the community participated and offered "Abedhu" on the occasion.

MAHASAMADHI OF SWAMI NATRAJ NANDA SARASWATI

Swami Natraj Nanda Saraswati attained Mahasamadhi on 10th December, 1994 at Jammu. He suffered a paralytic stroke on 5th December, two days before the mass Yageopavit organized by him. Swami Ji had

his Ashram at Baramulla and in the wake of displacement he had established it at Ramban. His mortal remains were taken to his Ashram for the last rites.

ACHIEVEMENTS & DISTINCTIONS

(a) Prof. S. K. Shah of the University of Jammu has been nominated as a member of the Programme Advisory Committee (PAC) of the Ministry of Science and Technology, Govt. of India, for earth sciences. PAC is is an apex body of the Govt. which identifies thrust and challenging areas of research in the country and recommends their funding by the Govt. agencies. Prof. Shah is a leading earth scientist of the country. Incidentally he is also the Editor of "Kashyap Samachar" and General Secretary of the K. P. Sabha.

b) Miss Deepshlkha Munshi D/O Professor Ashok Munshi obtained first position in the competitive test held by the Competent Authority of J&K for admission to the M.B.B.S course in the state Medical College Congratulations Deepshikha !

(If you have News or information deserving publication, please send it to the News Correspondant, Kashyap Samachar, Kashmiri Pandit Sabha, Ambphalla, Jammu-11005. The news items should be neatly written or preferably typed. The sender should give his full name and address below the signature.)

*

MATRIMONIAL

- WANTED good looking, qualified, unmarried girl/issueless widow in the age group 30-33 for an issueless doctorate widower boy working as a lecturer in a reputed college. Correspond with full biodata to Box No 94/12/A.

- WANTED suitable match, preferably a working girl for a KP boy 30/ 5'-10" Diploma in Hotel Management, working with a reputed chain of restaurants and hotels at Delhi, having own house in New Delhi. Correspond with relevant details with Prof. C. L. Dhar, Regional Engineering College, Hamirpur (H.P.)-177005.

- WANTED suitable well placed, service/business boy above 30 for State employed Kashmir Brahmin girl, reputed family. Correspond Box No. 94/12/B.

- WANTED KP match for KP Manglik/Rakshas Zaat homely girl B.Sc. 27/157 belonging to respectable family of Srinagar. Preference Govt./Bank/ Insurance/Public Undertaking job holder. Correspond with Tekni/Biodata through Box No. 94/12/C.

All box responses should be addressed to Kashyap Samachar, Kashmiri Pandit Sabha. Ambphalla, Jammu - 180 005 giving the Box No. clearly on the envelope.

पंचांग दर्पण

(5070 मार्ग कृष्ण पक्ष, दिसम्बर 1994)

दस.	तिथि	वार	श्राद्ध	संक्षिप्त बिवरण
1★	त्रयो. दि	गुरू	पूर्व	त्र्यहः।
2	अमा प्र	शुक्र	स्व	———

मार्ग शुक्लपक्ष

दस.	तिथि	वार	श्राद्ध	संक्षिप्त बिवरण
3	प्रति प्र	शनि	स्व	विवाह।
4	द्विती प्र	रवि	स्व	विवाह।
5	तृती प्र	सोम	स्व	विवाह।
6	चतु प्र	भौम	स्व	विवाह।
7	पच प्र	बुध	स्व	यज्ञोपवीत। विवाह।
8	षष्ठी प्र	गुरु	स्व	कुमार षष्ठी। पंचक आरम्भ विवाह यज्ञोपवीत
9	सप्त प्र	शुक्र	स्व	——
10	अष्ट प्र	शनि	स्व	विवाह।
11★	नव. प्र	रवि	स्व	विवाह।
12	दश. प्र	सोम	स्व	पंचक समाप्त। यज्ञोपवीत। विवाह
13	एका प्र	भौम	स्व	गीता जयन्ती। मोक्षदा एकादशी।
14	द्वा. प्र	बुध	स्व	——
15	त्रयो. प्र	गुरू	स्व	मासान्त।
16	चतु प्र	शुक्र	स्व	सक्रान्ति व्रत। श्री दत्तात्रेय जयन्ती
17★	पूर्णि प्र	शनि	स्व	——

पौष कृष्ण पक्ष

दस.	तिथि	वार	श्राद्ध	संक्षिप्त बिवरण
18	प्रति प्र	रवि	स्व	मुंजहर नहर। दिन अधिक। मातृका पूजा।
19	प्रति दि	सोम	—	——
20	द्विती दि	भौम	पूर्व	——
21	तृती दि	बुध	पूर्व	संकट चतुर्थी उत्तरायण आरम्भ।
22	चतु दि	गुरू	पूर्व	——
23	पंच दि	शुक्र	पूर्व	——
24	षष्ठी दि	शनि	पूर्व	शनि मास, शनि वर्ष
25★	सप्त दि	रवि	पूर्व	त्र्यहः। महाकाली जयन्ती।
26	नव. प्र	सोम	स्व	——
27	दश. प्र	भौम	स्व	आनन्देश्वर भैरव जयन्ती।
28	एका. प्र	बुध	स्व	सफला काह। शिशुर लागुत।
29★	द्वा. प्र	गुरू	स्व	शिशुर लागुन।
30	त्रयो प्र	शुक्र	स्व	शिशुर लागुन।
31	चतु. प्र	शनि	स्व	यक्षामावसी।

चिह्न जानकारी : दि=दिन तक। प्र=रात तक। स्व=अपने दिन पूर्व=पहले दिन।

★सर्वार्थ सिद्धि योग।